ज्ञानामृत

जनवरी, 1987

वर्ष 22 ❋ अंक 7

मूल्य 1.50

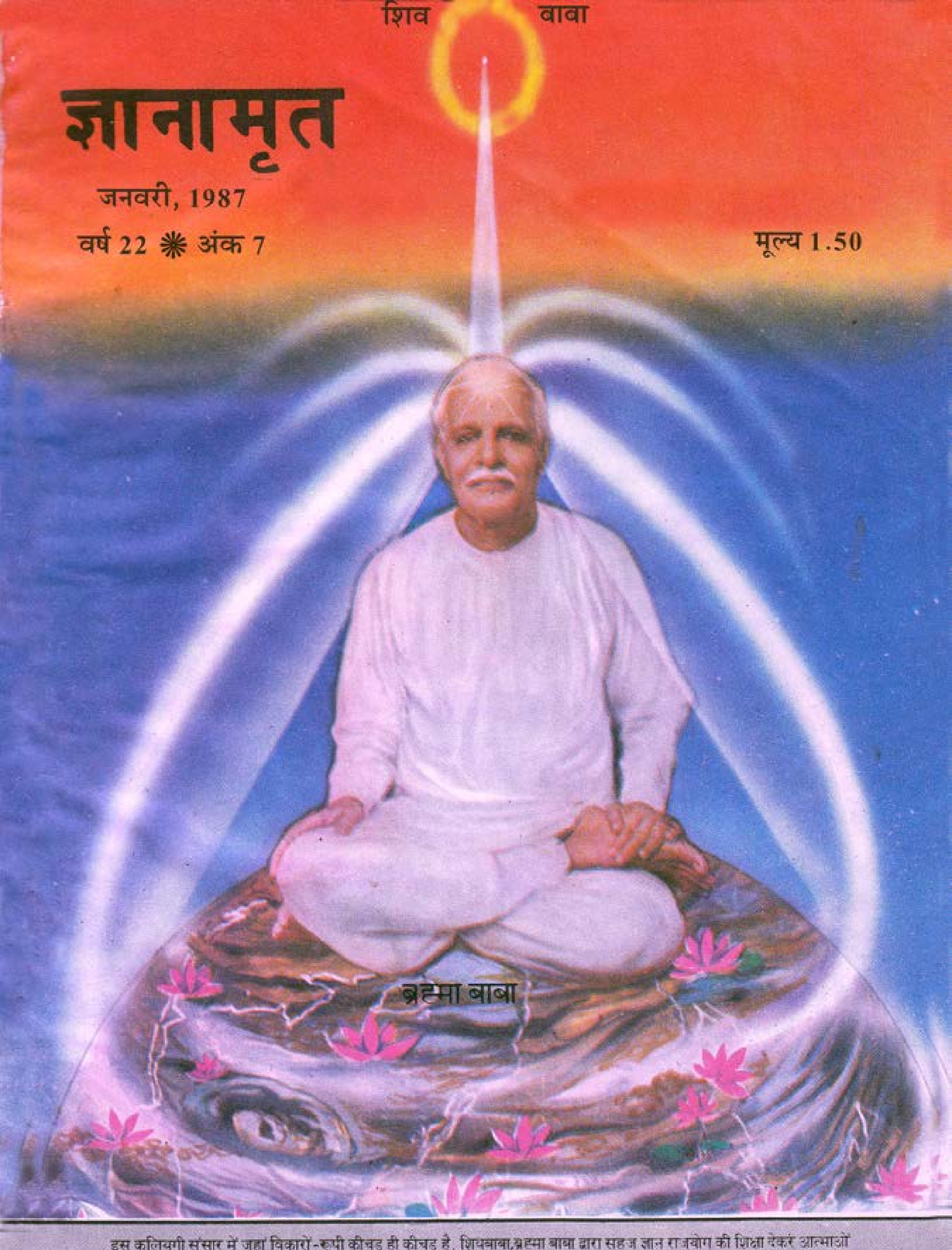

इस कलियुगी संसार में जहां विकारों-रूपी कीचड़ ही कीचड़ है, शिवबाबा,ब्रह्मा बाबा द्वारा सहज ज्ञान राजयोग की शिक्षा देकर आत्माओं को कमलसम पवित्र बना रहे हैं।

रॉयपुर: स्वर्ण जयंति वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित 'विश्वशांति सम्मेलन' को सम्बोधित करती हुई साथ में बैठे हैं, ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. ओमप्रकाश, जानकी दादी जी भ्राता तिलकराम जी देवांगन।

बैरागढ़ (भोपाल): में रूहानी सिंधी सम्मेलन में (दाएं से) म.प्र. विधानसभा अध्यक्ष भ्राता डॉ. राजेंद्र प्रसाद शुक्ल जी प्रवचन करते हुए। ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी, दादी जानकी जी, भ्राता एस.पी. निगम, उपसचिव खाद्य, भ्राता कछाराम ज्ञान चंदानी, उपमहापौर बैरागढ़, तथा भ्राता राजकुमार जी चीफ इंजीनियर देसु, देहली।

न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री को ईश्वरीय संदेश देती हुई ब्र.कु. हृदयमोहिनी जी।

बम्बई: फिल्म जगत की प्रसिद्ध अभिनेत्री हेमा मालिनी को शांति का संदेश और ईश्वरीय सौगात देने के पश्चात ब्र.कु. योगिनी, ब्र.कु. मीरा और ब्र.कु. अमुना।

विन्ध्याचल (मिर्ज़ापुर): में नेपाली बाबा द्वारा आयोजित 'विश्वशांति महायज्ञ के उपलक्ष्य में हुए 'विश्व-धर्म संसद' अधिवेशन में सनातन धर्म का सच्चा अर्थ समझाती हुई बी.के. मनोरमा बहन।

बुटवल: स्वर्ण जयंति समारोह कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी कमला श्रेष्ठ नेपाल सरकार के पंचायत एवं विकास मंत्री भ्राता पशुपति शमशेर जबराज जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए।

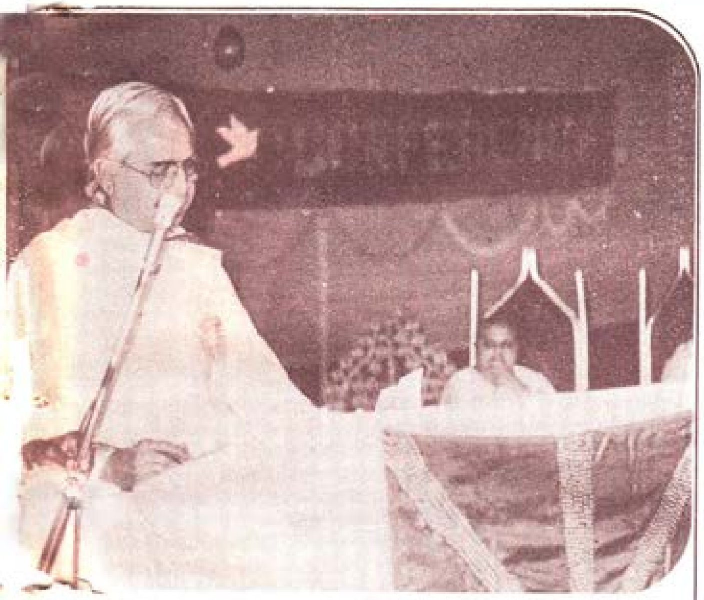

गोहाटी: भ्राता के.एम. लहरी, मुख्य न्यायाधीश गोहाटी उच्च न्यायालय, शांति सम्मेलन में भाषण करते हुए।

सिकन्द्राबाद (आ.प्र.): ब्र.कु. सुधा तथा बंदुराव आ.प्र. के उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता के. भास्करन को आबू में होने वाले 'विश्वशांति सम्मेलन' में पधारने का निमंत्रण देते हुए।

साउथ लंदन: करोडॉन में राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर पर ब्र.कु. सुदेश मेयर मेक्डोनाल्ड तथा उनकी धर्मपत्नी से ज्ञान-वार्तालाप करते हुए।

काठमाण्डू (नेपाल): महारानी के ३८वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में जुलूस निकाला गया जिसमें ब्र.कु. भाई-बहिनें दिखाई दे रहे हैं।

नई दिल्ली : भारत के राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैलसिंह जी से ब्रह्माकुमारी दादी जानकी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्र.कु.ई.वि. विद्यालय, ब्र.कु. दादी हृदयमोहिनी जी तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहिनों ने भेंट की। उन्हें ब्र.कु. दादी जानकी जी ने 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' अभियान की सफलता के बारे में अवगत कराया तथा ब्र.कु. हृदयमोहिनी जी ने उन्हें विश्वविद्यालय के गोल्डन जुबली कार्यक्रम का निमंत्रण दिया।

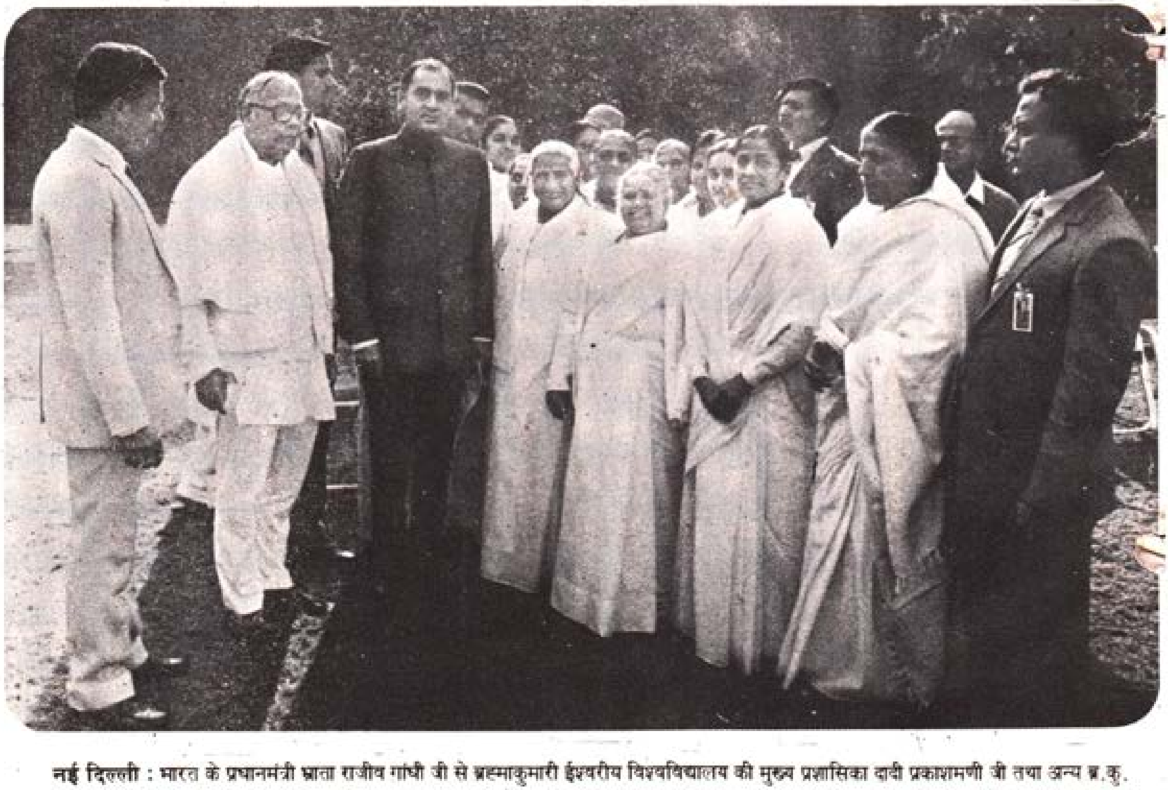

नई दिल्ली : भारत के प्रधानमंत्री भ्राता राजीव गांधी जी से ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहिनों ने भेंट की। दादी जी ने उन्हें 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' अभियान के परिणामों से अवगत कराया। आदरणीय प्रधानमंत्री जी को विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती समारोह में पधारने का निमंत्रण भी दिया गया।

अमृत-सूची

१. वरदाता का वरदान लेना है तो सच्चे बनो, सच की कमाई करो ? १
२. ब्रह्मा बाबा (सम्पादकीय) २
३. तब तो वर्ष को नव कहेंगे ५
४. बाप समान स्थिति ६
५. प्रतिज्ञा ९
६. पिताश्री जी की दिव्य स्मृति में ९
७. आओ मेरे महावीर बच्चे—ऐसा कहकर बाबा ने मुझे महावीर बना दिया ११
८. कहा करते थे बाबा १२
९. पिताश्री जी के अंग-संग रहने का एक अनोखा अनुभव १३
१०. ब्रह्मा बाबा के जीवन की १६ कलाएं १५
११. सम्पूर्ण आरोग्य को प्राप्त करने की कला १९
१२. आइये ! अनुमान से बचें २१
१३. हे आदि देव महान् २२
१४. आइये शांति-पथ के अनुगामी बनें २३
१५. विजयी रत्न २५
१६. स्नेह २८
१७. सहकारात्मक सेवा और सतयुगी अहिंसा परमोधर्म २९
१८. ओ ! मानवता के अग्रदूत ३०
१९. आध्यात्मिक सेवा-समाचार ३१

''वरदाता का वरदान लेना है तो सच्चे बनो, सच की कमाई करो''

ब्र.कु. दादी प्रकाशमणी

सच्चाई एक बहुत बड़ी मुख्य धारणा है। सतयुग है—सच का युग, कलियुग है झूठ युग। लोग कहते हैं आज की दुनिया में झूठ का बोलबाला है, लेकिन वह है अल्पकाल का। सत हमेशा विजयी है। झूठ की हार है। तो हरेक पहले स्व से पूछे—कि मैं स्व से कितना सच्चा हूं ? फिर बाप से कितना सच्चा हूं ? कई खुद से खुद सच्चे नहीं हैं, कैसे ? जो खुद से सच्चा होगा—उसको पहले तो रियलाइजेशन (अनुभूति) की सही बुद्धि होगी । सच्चाई वाले के पास बुद्धि सत अर्थात् सही होगी । ज्ञान माना रियलाइजेशन, ज्ञान मानों बुद्धि सही-सही जज करे । जैसे आइनें कई प्रकार के होते हैं, नाम आइना होता लेकिन क्वॉलिटी में फर्क होता है। चेहरा देखने में भी अंतर पड़ जाता है। ऐसे बुद्धि सबके पास है लेकिन रियलाइज करने का सही आइना, हरेक के पास एक जैसा नहीं है। इसके लिए बाबा ने यह नॉलेज दी है कि पहले बुद्धि को सही करो, बुद्धि सही हो तो सच्ची हो । बुद्धि टेढ़ी-मेढ़ी होगी तो सच क्या बोलेंगे। बुद्धि सही नहीं, रियलाइज नहीं तो रिजल्ट में खुद ही खुद धोखा खाते । इसलिए कोई कहे कि मुझे माया के तूफान आते हैं, मैं कहती हूं—क्यों आते ? अगर इतना ही जान लो कि मैं आत्मा थी सच पवित्र, मैं आत्मा थी ही देवता, मैं आत्मा अनादि आदि हूं ही पवित्र। तो यह देह का जो अपवित्र आकर्षण है, वह क्यों उठे ? तो पहले खुद से हरेक पूछे कि मैंने यह पक्का-पक्का दृढ़ निश्चय किया है कि मैं असली आत्मा पवित्र २४ कैरेट वाली गोल्ड हूं। यह निश्चय है ? अगर यह निश्चय है तो मैं अपवित्र देह हूं, यह खाद आत्मा में डालते ही क्यों हो। यह देह-अभिमान आता ही क्यों है ? बस यही पहले पुरुषार्थ चाहिए । यह देह का भान देह की आकर्षण, देह तरफ बुद्धि, देह का नशा सर्वप्रथम यही झूठ है।

बाबा कहते—तुम जो हो जैसे हो मेरे हो । हम जो हैं जैसे है वह बाबा के हैं । अच्छे हैं तो भी बाबा के हैं, बुरे हैं तो भी बाबा के । वह बुरों को ही तो अच्छा बनायेगा । अगर कोई डॉक्टर के पास भी झूठ बोले तो वह दवा क्या देगा ? इसलिए झूठ बोलना खुद का ही नुकसान करना है। झूठ बोलने वाले का जीवन सफल नहीं हो सकता। उसे कभी भी दुआएं नहीं मिल सकती हैं । वरदाता से वरदान नहीं मिल सकते हैं । झूठ बोलने वाला कभी विजयी नहीं बन सकता है। अगर रावण के श्राप से बचना है तो सदा सच्चे रहो । सच की पढ़ाई पढ़ो । सच की कमाई करो । सच की जीवन बनाओ । दुनिया में सच की बहुत बड़ी वैल्यू है। ईश्वरीय दुनिया में सदा सच्चे रहो । ब्राह्मण जीवन माना ही सच्ची जीवन, देवताई जीवन । देवता माना ही सच्चे, पवित्र, रीयल गोल्ड। सच बोलने वाले की बुद्धि व्यर्थ में नहीं जाती । बुद्धि जो व्यर्थ-संकल्पों में जाती है—उसका कारण है झूठ । झूठ वा फालतू बात समय बर्बाद करती है। सच में कमाई है, इसलिए वेस्ट थाट, वेस्ट बाक्स में डालो । □

ब्रह्मा बाबा

ब्रह्मा बाबा, जिनको अव्यक्त हुए अब १८ वर्ष हो चले हैं, की प्रतिमा बहुमुखी थी। उनके व्यक्तित्व का एक विशेष पहलु यह था कि कोई बच्चा हो या बूढ़ा, धनवान हो या निर्धन, विद्वान हो या अशिक्षित, जल्दी ही उनकी निकटता का अनुभव करता था। हरेक को ऐसा अनुभव होता था कि बाबा के मुखारविन्द से जो शब्द विनिमृत हो रहे हैं, वे आत्मीयता और अपनत्व को लिए हुए हैं। उनमें औपचारिकता (Formality) कम है परंतु शिष्टता-युक्त स्नेह अधिक। कितना भी कोई कमर कस कर उनके पास आता, वह उनके स्नेह से घायल हुए बिना न लौटता। वह बाबा से दोबारा अथवा बार-बार मिलने की इच्छा मन में लेकर जाता। बाबा का प्यार पत्थर को भी पिघला कर पानी बना देता और तप्त का ताप बुझाकर उसे शांति और शीतलता प्रदान करता। उनके पास बैठकर, उनसे मिलकर, उनके वचन सुनकर ऐसा लगता कि इस बेगाने संसार में हमने यहाँ ही अपनापन पाया है। एक यही जगह है जहाँ कृत्रिमता नहीं बल्कि वास्तविकता है और जिसके वचन हम सुन रहे हैं, उसके मन में एक ऐसा प्यार और दुलार है जो इस विशाल संसार में ढूंढ़ने पर भी अन्य कहीं नहीं मिल सकता। वह प्यार मन में इतना गहरा उतर जाता कि उसकी गहराई समुद्र से भी अधिक और उसकी छाप एक अमिट स्याही के ठप्पे की छाप से भी अधिक अमिट बन जाती। उनके वचन एक ऐसा प्रसाद का रूप थे जो सचमुच मन की चंचलता को हर लेते और आत्मा में मिठास भर देते।

इसी प्रसंग में देहली के एक व्यक्ति के वृत्तांत का उल्लेख करना समुचित होगा। वह बाबा का कट्टर विरोधी था। उसका कारण यह था कि उसकी धर्मपत्नी ईश्वरीय सेवाकेंद्र में आती थी और वह उस सपत्नीक जीवन में भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने में सुदृढ़ थी। यह व्यक्ति समझता था कि बाबा ने उससे कुछ छीन लिया है और उसको भोग-सुख से वंचित किया है। अत: उसके मन में बाबा के प्रति घृणा, वैर, द्वेष और रुष्ट भाव था। एक बार जब बाबा देहली में आये तो उसे मालूम हुआ कि जिस ईश्वरीय सेवाकेंद्र पर उसकी धर्मपत्नी जाती है, वहाँ से एक बस प्रात: ४.००-४.३० बजे क्लास के बहन-भाइयों को लेकर वहाँ क्लास के लिए ले जाती है, जहाँ बाबा ठहरे हुए हैं। एक दिन यह सोचकर कि वह भी उस बस के द्वारा वहाँ पहुँचकर बाबा से झगड़ा करेगा। प्रात: ही अपनी धर्मपत्नी के पीछे-पीछे आते हुए, धर्मपत्नी के मना करने पर भी केंद्र पर पहुँचकर उस बस में बैठ गया। जिन लोगों को उसके व्यवहार और उसकी मानसिक अवस्था का पता थ, वे सब सोचने लगे कि इसे साथ ले जायेंगे तो यह वहाँ जाकर झगड़ा करेगा। अत: नम्रता पूर्वक, सम्मान देते हुए यह आवेदन किया गया कि बाबा से मिलने के लिए कोई समय निश्चित किया जाएगा और तब वह वहाँ जाए तो अच्छा होगा। परंतु वह कहाँ इस बात को मानने वाला था ? उसने तो मन में झगड़े की ठान रखी थी। आयोजकों ने सोचा कि वहाँ पहुँचकर बस को थोड़ा पहले रोककर या तो दूर से ही इसे माइक से सुनने देंगे या इसे बहुत पीछे बिठायेंगे और क्लास समाप्त होते ही इसे बस में साथ ले आयेंगे।

वह वहां क्लास के अंत में जाकर बैठा परंतु बैठने के बाद वहाँ से हिला नहीं। क्लास के सारा समय उसने गर्दन भी नहीं हिलाई। आंखें भी शायद ही झपकी हों। वह बाबा को एकटक होकर देखता ही रहा और सुनते-सुनते मंत्र-मुग्ध हो गया। क्लास के बाद जब उसे उठने के लिए कहा गया तब वह उठता ही नहीं था। उसकी आंखें इतनी गीली थी कि आंसू टपकने को आ रहे थे। बाबा से लड़ने की बजाय वह अपनी धर्मपत्नी को उलाहना देने लगा। वह बोला, बाबा तो अस्सी साल का जवान है ! कितना खूबसूरत है बाबा ! कैसे सीधे बैठते हैं ! तू अब तक पवित्रता ही की बात मुझसे कहती रही और ऐसे बाबा के बारे में तो कुछ बताया ही नहीं। मैं बाबा से मिलकर आऊंगा। वह टोली लेने के लिए बाबा की ओर बढ़ा, बाबा ने उसे पुचकारते और मुस्कुराते हुए टोली दी और वह ऐसा खुश हो गया कि उसे भी अपना बाबा मिल गया।

★★★★★

बाबा ज्ञान-बिन्दुओं को जिस रीति से स्पष्ट करते, वह रीति भी विचित्र थी और सम्पूर्णता की ओर ले जाने वाली थी। वे ईश्वरीय ज्ञान के किसी भी सिद्धांत को सूक्ष्मता की सीमा तक ले जाते। उदाहरण के तौर पर, साहित्य-लेखन के कार्य में लगे होने के कारण मैं जब कभी उनके पास कोई लिखित निबंध (Essay) अथवा लेख ले जाता तो वे उसमें शब्दों के साथ कई विशेषण जोड़ देते जिससे पाठक को तत्सम्बन्धी तथ्य अधिकाधिक स्पष्ट

होते जाते। गोया पाठक को 'ज्ञान' ही नहीं, 'विशेष ज्ञान' प्राप्त होता। एक बार की बात है कि जो लिखित सामग्री मैं बाबा के पास ले गया, उसमें वर्तमान सृष्टि को कलियुगी सृष्टि कहा गया था जो कि ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार ठीक ही था। बाबा ने कहा कि कलियुगी शब्द से पहले धर्म-ग्लानि युक्त (Irreligious), सत्यता-रहित (Unrighteous) शब्द जोड़ो। जब मैं ये विशेषण जोड़कर तथा अन्य संशोधन करके बाबा के पास लेख को पुनः ले गया, तब बाबा ने कहा कि इसमें कुछ और विशेषण जोड़ने चाहिएं और तीसरी बार कुछ और विशेषण जोड़ने को कहा। अंत में कलियुगी शब्द से पहले तमोप्रधान, भ्रष्टाचारी, पतित, आसुरी, मर्यादाहीन, हिंसा-प्रधान आदि आदि शब्द भी जुड़े हुए थे। इसके बाद भी बाबा ने कहा कि १००%' (शत प्रतिशत) और दीवालिया (Insolvent) शब्द इसमें और जोड़ दो।

इसी प्रकार एक बार जब यह सुभाषित (सुवाक्य) लिखा गया कि "पवित्रता, सुख और शांति आपका ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार है" तब बाबा ने कहा कि इससे पहले '१००%' या 'सम्पूर्ण' शब्द जोड़ो और यह लिखो कि '२१ जन्मों के लिए' ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार है। यह लिखने के बाद फिर बाबा ने कहा कि प्रश्न उठता है कि ईश्वरीय जन्म कब होता है और यह अधिकार कब मिलता है ? यह बात समझाते हुए उन्होंने इस सुवाक्य में "अब नहीं तो कभी नहीं" शब्द जोड़ने का निर्देश दिया।

★ ★ ★ ★ ★

ज्ञान को सम्पूर्णता से समझने और समझाने के ये प्रयत्न बाबा केवल लिखित सामग्री ही के द्वारा नहीं करते थे बल्कि जब कहीं सम्मेलन या प्रवचन आदि होता, उसमें भी बाबा तीन प्रकार की सम्पूर्णता की ओर ले जाने का सदा विशेष प्रयास कराते रहते। एक तो बाबा इस ओर ध्यान खिंचवाते कि वक्ता की अपनी स्थिति पवित्र और योग-युक्त होनी चाहिए। इसे वे यों समझाते कि जैसे तलवार का जौहर होना जरूरी है, ऐसे ही पवित्रता और योग-युक्त स्थिति ज्ञान रूपी तलवार का जौहर है। दूसरा वे इस ओर ध्यान खिंचवाते कि प्रवचन में कौन-कौन सी बात बताना जरूरी है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए वे समझाते कि जैसे कोई अच्छा वकील ऐसा नुक्ता बता देता है कि जिससे बात जज की समझ में पैठ जाती है और जो जज पहले फांसी की सजा देने की बात सोच रहा था, वह अब अपराधी को मुक्त करने का निर्णय करता है। वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति को भी ऐसी-ऐसी बात सुनानी चाहिए कि पापी, पतित या अपराधी व्यक्ति की बुद्धि में वह ऐसी पैठ जाए कि पहले जहाँ वह भोग-विलास के जीवन की ओर प्रवृत्त था अब वह उससे मुक्त होने की बात का निर्णय करता है। बाबा कहते कि वकील को अगर समय पर प्वाइंट याद नहीं आएगी और वे जज के आगे कुछ नहीं रखेगा तो अपराधी अपना मुकदमा हार जाएगा और दण्ड का भागी होगा। यहाँ तक कि हो सकता है, उसे मृत्युदण्ड भी भोगना पड़े। गोया वकील की छोटी-सी गफलत से कितना नुकसान हो सकता है ! इसी प्रकार ज्ञानवान प्रवक्ता अगर भाषण के समय आवश्यक बातें कहना भूल जाता है तो सुनने वाले लोग विषय-विकारों में गोता लगाए दुःख-दंड के भागी बनते रहते हैं।

तीसरा, वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते कि बात समझाने की विधि (Method) क्या हो। केवल बात ही ज़रूरी नहीं होती, बात करने का तरीका भी महत्वपूर्ण होता है। बात कहना भी एक कला है। उस पर ध्यान देना, उसका अभ्यास करना, उसमें सम्पूर्णता लाना भी ज़रूरी है। इस बात को समझाते हुए वे कहते कि डॉक्टर जब किसी को टिंक्चर आयोडीन (Tincture Iodine) लगाता है तब वह उसे साथ-साथ सहलाता भी है, फूंक भी मारता है। जब कोई सर्जन (Surgeon) किसी का ऑपरेशन करता है तो वह उसे क्लोरोफर्म सुंघाता है ताकि उसे दर्द न हो। जब कोई इंजेक्शन लगाता है, तब वह पहले सूई को ऊबलते पानी में डाल कर कीटाणु-रहित और संक्रमण-रहित (Disinfect) करता है। इस प्रकार बाबा समझाते—दूसरों को सम्मान देते हुए तथा स्नेह और मर्यादा युक्त, शुभ और कल्याण की भावना से, अनुभव, निश्चय और ओज की भाषा से समझाना चाहिए, तब जाकर वह तीर ठिकाने पर लगता है।

इस प्रकार, जब कहीं कान्फ्रेन्स या प्रवचन का कार्यक्रम होता तो बाबा उस केंद्र पर पत्र लिख भेजते कि अच्छी अवस्था वाला भाषण करे। कान्फ्रेन्स में निर्धारित विषय पर मुरली में कुछ प्वाइंट देते अथवा पत्र लिख भेजते कि यह-यह प्वाइंट कहना जरूरी है और कि सारी क्लास से मिलकर विचार सागर मंथन करे कि भाषण में क्या-क्या कहना चाहिए। वे एक पत्र ही लिखकर समाप्त न कर देते परंतु एक के बाद दूसरे के बाद तीसरे के बाद चौथा पत्र बाबा लिखते ही जाते। बात यहीं समाप्त न हो जाती। कई बार तो वे पत्र में कुछ प्वाइंट लिखकर और कुछ मौखिक रूप से बताकर किसी बहन या भाई को मधुबन से भेज देते ताकि वह वहाँ पहुँच कर भाषण करने वाले ब्रह्मा वत्स को बाबा के सारे निर्देश कह सुनाए। इसके अतिरिक्त बाबा सम्मेलन के आयोजकों को भी एक तार कर देते कि वे तार में लिखित संदेश पढ़कर श्रोताओं को सुनायें। यहाँ तक भी होता कि बाबा उस संदेश को छपवाकर बांटने का निर्देश भी देते। गोया

किसी भी कार्य को सम्पूर्णता से करने और कराने पर ही बाबा का ध्यान लगा रहता।

एक बार की बात है कि नई-देहली में विज्ञान भवन में न्यायाधिशों का सम्मेलन होने वाला था, तब उसमें हमारे भाषण करने की तो बात ही नहीं थी परंतु बाबा तो हरेक सम्मेलन के वक्ताओं और श्रोताओं को किसी-न-किसी तरह ज्ञान दिलाने की युक्ति रचा करते। तब बाबा ने उस समय के सभी केंद्रों को यह निर्देश दिया कि वहाँ आने वाले बहन-भाई, जिन्हें भी लिखने में रुचि हो, इस विषय पर लिखें कि न्यायालयों में मुकदमा करने वाला, गवाही देने वाला और जिस पर मुकदमा हो, वह व्यक्ति अपना वक्तव्य देने से पहले शपथ लेते अथवा लिखते समय यह जो वाक्यांश प्रयुक्त करते हैं कि ''मैं भगवान को हाजिर नाज़िर मानकर जो कुछ कहूँगा, सच कहूँगा...'' यह वास्तव में गलत है और इस कारण सारी कसम (शपथ) ही झूठी हो जाती है। ऐसा कहकर बाबा ने अनेक बहन-भाईयों को लिखने के काम में लगा दिया। दूसरे पत्र में बाबा ने यह लिखा कि इस बात को भी स्पष्ट किया जाए कि गीता को हाथ में उठाकर भी कसम लेने में भी त्रुटि है क्योंकि गीता के बारे में लोग यह नहीं जानते कि गीता-ज्ञान-दाता परमात्मा कौन है ? गीता का भगवान कृष्ण मानने से भी उनकी वह कसम झूठी हो जाती। तीसरे पत्र में बाबा ने यह लिखा कि न्यायाधिशों को यह भी लिखना चाहिए कि सम्पूर्ण न्याय करने के लिए न्यायकर्त्ता का मन निर्विकार होना ज़रूरी है। वर्ना न्याय करने में बाधा उपस्थित हो सकती है। चौथे पत्र में बाबा ने यह कहा कि इन बातों को उठाकर उन्हें आत्मा और परमात्मा का ज्ञान देना चाहिए और कहना चाहिए कि अब आप अपना निर्णय स्वयं करो (Judge Yourself) । पत्र में बाबा ने यह लिखा कि इस सब को अच्छे कागज़ पर अच्छे तरीके से छपवाकर यह सभी न्यायाधीशों को बांटा जाए,वकीलों को भी दिया जाए। धर्माचार्यों को भी बांटा जाए और संसद सदस्यों को भी दिया जाए क्योंकि अब वे भी शपथ लेते हैं। इस विधि बाबा सभी बच्चों को कभी एक कभी अन्यवर्ग की सेवा में लगा देते। वे एक ही समय में अनेक स्थानों पर होने वाली अनेकानेक प्रकार की सेवाओं के लिए निर्देश भेजते रहते और सभी का सतत-निरंतर नेतृत्व करते रहते। इससे सभी को ऐसा महसूस होता कि हर दिन उन्हें कुछ नये विचार, नई शिक्षायें, नई उमंगें और नये निर्देश मिल रहे हैं।

★ ★ ★ ★ ★

हम इस लेख के प्रारम्भ में कह रहे थे कि बाबा को अव्यक्त हुए १८ वर्ष हो चले हैं। दूसरे शब्दों में अव्यक्त वाणी के १८ अध्याय हमारे सामने हैं। महाभारत के भी १८ पर्व हैं परंतु गीता से ही सारा महाभारत समाप्त नहीं हो जाता। महाभारत में गीता के बाद एक अणु गीता का भी वर्णन आता है।

यों देखा जाए तो सन् १९५१ से, जब से कि ईश्वरीय विश्वविद्यालय का स्थानान्तरण होने के बाद विशेष सेवा प्रारम्भ हुई, सन् १९६९ तक भी १८ ही वर्ष होते हैं। उन १८ वर्षों में विविध रूप से ईश्वरीय सेवा के विधि-विधान का ब्रह्मा वत्सों को प्रशिक्षण मिला। उन्हें ज्ञान की पैनी दृष्टि मिली तथा योग की सूक्ष्मता का उन्हें अनुभव कराया गया।

यद्यपि ईश्वरीय विश्वविद्यालय की प्रबंधक समिति (Managing Committee) का औपचारिक रीति से निर्माण सन् १९३७ में हुआ, तो भी बाबा को साक्षात्कार तो १९३५-३६ से ही होने लगे थे और तभी से बाबा काश्मीर से ज्ञान के पत्र लिखते थे जिन्हें हैदराबाद में एक प्रकार के कौटुम्बिक सतसंग में पढ़कर सुनाया जाता था और उन पर चर्चा की जाती थी। इस प्रकार के लिखे गये पत्र ही मुरली का प्राथमिक रूप थे बल्कि यों कहें कि प्रारम्भ में बाबा श्रीमद्भगवद्गीता को पढ़कर उसकी जो नयी, अद्‌भुत और क्रांतिकारी व्याख्या किया करते, वही गीता-ज्ञान की मुरली का आदिम रूप थे। तब से लेकर १९५१-५२ तक भी १७-१८ वर्ष ही होते हैं।

प्रारम्भ में गीता को लेकर ज्ञान सुनाने की जो विधि थी, उसके पीछे भी अलौकिक रहस्य थे। गीता भारत में एक सर्वमान्य ग्रंथ रहा है। उसको लेकर ज्ञान सुनाने से जन-जन को कोई बात समझाना सहज हो जाता है।परंतु बाबा द्वारा गीता के श्लोकों की जो व्याख्या होती, वह नवीन और क्रांतिकारी थी। वैसी व्याख्या अब तक किसी ने नहीं की थी। वास्तव में उस व्याख्या से ही समझा जा सकता है कि इसका व्याख्याता कोई मनुष्य नहीं है बल्कि जिसने आदि गीता सुनाई थी, वह गीता का भगवान स्वयं ही अपना भाव बता रहा है। उदाहरण के रूप में गीता में जो यह श्लोक आया है कि ''काम, क्रोध और लोभ नरक के द्वारा हैं'' उसका अर्थ अथवा उसकी व्याख्या करते हुए सभी ने 'काम' को 'कामना' या 'वासना-भोग' माना है। परंतु किसी ने भी यह नहीं कहा कि पहले यह संसार स्वर्ग था जहाँ काम विकार नहीं था। और कि काम वासना के बाद ही यह संसार नर्क बना और कि भगवान इसलिए अब काम की बात कह रहे हैं क्योंकि अब नर्क का विनाश होना है और पवित्रता द्वारा पुनः सतयुग अथवा स्वर्ग की स्थापना होनी है। ऐसी व्याख्या पहली ही बार बाबा द्वारा हुई। यदि इससे पहले किसी ने कभी ऐसी व्याख्या की हो तो संसार को यह चुनौती है कि वह हमें

बताए कि वह व्याख्या कहाँ उपलब्ध हो सकती है। इस प्रकार भगवद्गीता की नवीन व्याख्या से व बाबा द्वारा लिखे पत्रों से मुरलियाँ प्रारम्भ हुई और अब हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि हम स्वयं गीता के भगवान से अद्‌भुत और 'अव्यक्त गीता' सुन रहे हैं ! यदि इसी बात को ही देख लिया जाए कि बाबा द्वारा जो गीता के महावाक्यों की व्याख्या दी गई और गीता के भगवान का परिचय दिया गया तथा महाभारत युद्ध के वास्तविक स्वरूप का बोध कराया गया, वह आज तक के सभी धुरंधर विद्वानों, महापंडितों एवं मुनि-मनीषियों से आद्योपान्त भिन्न है, निराला है एवं परम कल्याणकारी है तो उससे भी सिद्ध है कि यह ज्ञान ब्रह्मा बाबा ने नहीं दिया बल्कि उनमें प्रवेश होकर स्वयं गीता के भगवान शिव ने दिया।

—जगदीश

झांसी शहर में 'शांति प्रदर्शनी' के उद्घाटन पूर्व जुडिशियल मैजिस्ट्रेट भ्राता आर.एल. सांखला जी तथा अन्य भाई-बहिनें शिवबाबा की याद में।

बड़ोदा: शांति अभियान का उद्घाटन करते हुए रमेश ठाकोर विधानसभा सदस्य।

''तब तो वर्ष को नव कहेंगे''

ब्र.कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क , देहली

बाप एक है, धाम हमारा एक।
धर्म एक है, ज्ञान हमारा एक।।
वेष एक है, प्लान हमारा एक।
लक्ष्य एक है, भविष्य हमारा एक।।

दिल भी होंगे एक जिस दिन।
एकता वर्ष तब कहेंगे।।
करके दिखाएं कुछ नव।
तब तो वर्ष को नव कहेंगे।।

क्या हुआ जो आ गया फिर वर्ष नया ।
था नया ही वह कभी आज जो चला गया॥
अनुभव आते-जाते हर वर्ष के संजोकर ।
अमोल माणिक शिव-बाप के खुद में पिरो कर॥

तहे दिल से विघ्न-विनाशक जब बनेंगे।
मुबारकबाद एक-दो को तब कहेंगे।।
करके दिखाएं कुछ नव ।
तब तो वर्ष को नव कहेंगे।।

विकलांगों का, महिलाओं का या बाल वर्ष ।
युवाओं का, शांति का या कोई वर्ष॥
रहा परमात्म संदेश सबमें हमारा लक्ष्य ।
औ 'वसुधैव कुटुम्बम्' को करे प्रत्यक्ष॥
मगर होगा पूर्ण तब ही।।

लक्षण भी जब खुद में धरेंगे।
करके दिखाएं कुछ नव।।
तब तो वर्ष को नव कहेंगे।।।

वर्ष तो क्या बाप तो युग मनाने आए हैं।।
हम-तुमको तो क्या नया विश्व बनाने आए हैं।
मेरा-तेरा, फलाना-चीरा स्वाहा करके।
जब संग हो लें सब 'वन' बन के।।

तो फिर एकता वर्ष कहेंगे।
करके दिखाएं कुछ नव।।
तब तो वर्ष को नव कहेंगे □

बाप-समान स्थिति

□बी.के. सूरज कुमार, मधुबन, आबू

स्वयं भगवान ने राजयोग सिखाकर समान बनने का लक्ष्य दिया। कहा—"तुम मेरे बच्चे हो, अतः जैसा मैं, वैसे ही तुम भी बन जाओ। जैसे मैं गुणों का सागर व सर्वशक्तिवान हूँ, वैसा ही स्वरूप तुम्हारा हो ताकि मेरे भक्त तुममें मेरा स्वरूप देख सकें।" कल्प का चक्र पूर्ण करते हुए शक्तिहीन व निर्गुणी बनी हुई आत्माएँ, इस सर्वोच्च लक्ष्य को पाना इतना सरल अनुभव नहीं करती। तपस्या चल रही है, रेस भी चल रही है कि कौन पहले बाप समान बनता है।

सर्वप्रथम मुख्यतः अष्ट रत्न बाप (भगवान) समान बनते हैं। अष्ट रत्न तो मानो "इस वसुधा के भगवान" के रूप में ही प्रसिद्ध होंगे। इन अष्ट रत्नों का प्रभाव ही समस्त विश्व को प्रभावित करने वाले अष्ट ग्रहों पर भी पड़ता है। इन अष्ट रत्नों में और निराकार परमात्मा में अंतर करना सहज न होगा। कितनी महान उपलब्धि होगी यह उनकी। उनकी स्थिति पूर्णतया निराकारी, निर्विकारी व निरहंकारी होगी। देह में रहते हुए भी मानो वे यहाँ नहीं होंगे। इस धरा पर मानो वे पवित्रता के अवतार, गुणों के भंडार और अनेक मनुष्यों के जीवन के आधार होंगे।

इसके बाद बाप समान होंगे १०० विजयी रत्न। ये भी भक्तों के पूज्य होंगे और स्थापना के कार्य में मुख्य एक्टर होंगे।

तपस्या के मार्ग पर चलकर ब्रह्मा बाबा सर्वप्रथम शिव बाबा के समान बने। और वही हमारे लिए साक्षात् प्रमाण हैं जो कि एक मनुष्य से सम्पूर्ण ब्रह्मा अर्थात् बाप समान बन गये। उनकी तपस्या व श्रेष्ठ कर्मों को अनुकरण करके हम भी बाप समान बन सकते हैं। यहाँ हम ८ बातों में उनकी तपस्या के उन स्वरूपों का उल्लेख करेंगे जिन्हें सहज ही अपना कर हम भी बाप समान सर्वोच्च स्थिति के अधिकारी बन सकते हैं।

हमें ब्रह्मा समान अव्यक्त फरिश्ता या विदेही बनना है और निराकार शिव समान निराकार, शक्ति-सम्पन्न व गुण-सम्पन्न। अर्थात कर्म क्षेत्र पर रहते हुए हम पूर्ण अनासक्त हो जाएँ, मानो अवतरित आत्मा होकर विचरें। इसके लिए ये मुख्य ८ सूत्र हैं—

दृष्टि में अलौकिकता हो

जैसे बाबा की दृष्टि पूर्ण अलौकिक है, जब भी कोई उनसे मिलने आता है, वे उसे आत्मिक दृष्टि देते हैं। उनकी दृष्टि किसी के भी वर्तमान स्वरूप को न देख, उनके सम्पूर्ण स्वरूप को ही देखती है। इसलिए वे सदा ही सुख स्वरूप हैं व उनकी दृष्टि में सभी की महानता समाई हुई है।

इसी प्रकार हम भी सबको आत्मिक दृष्टि दें, उसके सम्पूर्ण स्वरूप को ही देखें, सभी को सम दृष्टि से देखें। हमारी दृष्टि वैसी न हो जैसी सांसारिक मनुष्यों की। हमारी दृष्टि में ऐसा अव्यक्त भाव समाया हो जो दूसरों की कुदृष्टि भी पावन हो जाए।

साक्षात्कार मूर्त बनने के लिए हम ये ईश्वरीय महावाक्य याद रखें—"बच्चे, यदि तुम मेरे समान बनना चाहते हो तो जैसे मैं इस विशाल विश्व नाटक को साक्षी होकर देखता हूँ और बेफिकर रहता हूँ, वैसे ही तुम भी इस खेल को साक्षी होकर देखो और बेफिकर बादशाह बनो।"

अभ्यास—प्रतिदिन १५ मिनट का समय निकाल कर, शांत बैठकर, साक्षी होकर आत्माओं के इस विचित्र खेल को देखो और इसका ही चिन्तन करो। इस प्रकार साक्षी भाव बढ़ेगा और हमें साक्षात्कार मूर्त बनायेगा।

वृत्ति में कल्याण की भावना हो

जैसे बाबा की कल्याणकारी वृत्ति की सुगंध की लहरें, समस्त आत्माओं की दुर्गन्ध को व कटुता को दूर कर देती हैं, चाहे कोई कैसा भी दुराचारी उनके सामने आये, चाहे कोई कैसा भी कार्य उनके लिए करे—बाबा की वृत्ति में असीम कल्याण समाया हुआ देखा गया।

इसी प्रकार उन जैसी सर्वोत्तम स्थिति के लिए मन को इतना निर्मल कर दो कि उसमें बदले की भावना बदल कर शुभ-भावना हो जाए। दूसरे की किसी भी भावना का प्रभाव हमारी श्रेष्ठ भावना को परिवर्तित न करे। बाबा की ही तरह सब हमें भी अपना सहारा अनुभव करें। बाबा की ही तरह हमें भी सब अपना समझें। ऐसी श्रेष्ठ वृत्ति वाले ही इस धरा पर बाप की तरह महान प्रसिद्ध होंगे।

इसके लिए आवश्यक है—स्वार्थ का त्याग, मैं पन का त्याग और बेहद का समभाव।

अभ्यास—इसके लिए प्रतिदिन १५ मिनट स्वयं को विश्वपिता या जगतमाता समझ कर एकांत में बैठें और अपने कर्त्तव्यों व जिम्मेदारियों का चिन्तन व एहसास करें। ऐसे करने से प्रतिदिन

वृत्ति कल्याणकारी होती जाएगी।

मुख वरदानी हो

करोड़ों मनुष्यों का मुख प्रति पल अग्नि उगलता है, दूसरों के मन को घायल करता है, हृदय को बेंधता चला जाता है और मनुष्य के स्वमान को ठेस पहुँचाता है। हमारा मुख भी वही कार्य न करे। पवित्र आत्माओं का मुख कमल मुख होता है। पवित्र आत्माओं के मुख से बहती वाक्‌धारा सत्य ही सिद्ध होती है। अत: बाप-समान स्थिति को पाने की इच्छुक महान आत्माओं को किसी को भी श्रापित करने वाली वाणी नहीं उच्चारणी है। श्राप देने वाला तो रावण है, बाप नहीं। तो हमारे मुख से वरदानों की वर्षा हो। हमारे वचन दूसरों को वृक्ष जैसी शीतलता प्रदान करें, हमारे बोल दूसरों को उनकी महानताओं की याद दिलाएँ, हमारे बोल दूसरों की सुषुप्त शक्तियों को जागृत करें, निर्बलों को बल दें, हमारे शब्दों में अनुभवों का बल हो। तब ही तो लोग हमें अपना इष्ट स्वीकार करेंगे। यदि हमारे बोल उन्हें सुख व सहारा नहीं देंगे, तो वे हमें बाप-समान क्यों मानेंगे।

कर्म प्रेरक व भविष्य के विधान हों

योग-युक्त आत्मा का प्रत्येक कर्म स्वर्ग का विधान बन जाता है। ऐसे अलौकिक कर्म जो दूसरों के लिए प्रेरक हों, जो पापियों को पाप से मुक्त करने में समर्थ हों। ऐसे दिव्य कर्म ही आत्मा को बाप-समान स्थिति की ओर ले चलते हैं।

ब्रह्मा समान कर्म जो कि हमारे सामने प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, हमारे जीवन के आदर्श हों। क्योंकि ज्ञान-योग-युक्त आत्मा का सबसे मुख्य लक्षण है—कर्मों में, सम्बंधों में, सम्पर्कों में व सेवाओं में पूर्ण अनासक्त भाव। यही तो ब्रह्मा बाबा के प्रत्येक कर्म की झलक थी, कर्म व जिम्मेदारियाँ उन्हें कर्मातीत होने से रोक न सकीं!

इसी प्रकार शिव बाबा की तरह हमारे कर्म दिव्य हों। सांसारिक भाव, सकाम भाव, कर्मों में लिप्तता—इनसे मुक्त कर्म ही दिव्य कर्म हैं। यही कर्म धारा हमें बाप समान प्रसिद्ध करेगी क्योंकि कर्म ही तो हमारी श्रेष्ठ स्थिति के दर्पण हैं।

बुद्धि में सदा ज्ञान टपकता रहे

ईश्वरीय महावाक्य है—''बच्चे जैसे मेरी बुद्धि में सदा ही ज्ञान टपकता है, वैसे ही, यदि तुम मेरे समान बनना चाहते हो तो तुम्हारी बुद्धि में भी ज्ञान टपकता रहे।''

अर्थात् हम ज्ञान-स्वरूप रहें, ज्ञान स्मृति में रहे, विस्मृत न हो जाए। परंतु प्राय: अनेक बाह्य प्रभावों में बहता रहने के कारण मन ज्ञान से रिक्त हो जाता है। समय पर ज्ञान के शस्त्र विस्मृत हो जाते हैं और आत्मा स्वयं को खाली, खुशीहीन, उदास, निराश, भयभीत, चिन्तित या मूर्छित अनुभव करती है।

तो जैसे ब्रह्मा बाबा की बुद्धि में सदा ही ज्ञान की सरिता बहती थी, वैसी ही अमृत सरिता का सतत प्रवाह यदि हमारे मन में बहेगा तो मैल एक स्थान पर ठहरेगा ही नहीं। मन सदा आनन्दित, ऊँचे विचारों में व ऊँची स्मृतियों में हिलोरे मारता रहेगा और स्थिति सदा ही उन्नत रहेगी।

अभ्यास—इसके लिए प्रतिदिन १५ मिनट श्रेष्ठ संकल्पों का संग्रह करें। क्योंकि ज्ञान का बल भी बड़ा भारी बल है, इसके बिना न तो मायाजीत बना जा सकता है और न ही योग-युक्त।

ब्रह्मा समान अडोलता हो

अडोलता का आधार है—सर्व शक्तिवान में पूर्ण विश्वास। यही विश्वास ब्रह्मा बाबा की अडोलता का रहस्य था। जब सारा संसार एक ओर था और वे अकेले, बच्चों की सैना के साथ दूसरी ओर जब ३५० मनुष्यात्माओं की जिम्मेदारियों के भार का वहन करते हुए भण्डारे खाली हो गये थे, तब भी उनके ललाट पर 'क्या होगा' की एक भी रेखा नहीं उभरी थी। कारण ? कारण था सर्वशक्तिवान व उसके कार्य में पूर्ण विश्वास।

परंतु तपस्वी आत्माएँ पग पग पर, छोटी-छोटी जिम्मेदारियों में, समान विघ्नों में, तनिक से दुर्व्यवहार में, अल्पकालीन हानि में ही विचलित होती रहती हैं। कारण ? सर्वशक्तिवान को न जानना व उसमें विश्वास की कमी।

तो बाप-समान बनने की मंजिल के राहियो... तुम्हें अडोल होना होगा। जब विश्व की सबसे बड़ी शक्ति तुम्हारे साथ है फिर तुम चिन्ता की अग्नि क्यों सुलगाये बैठे हो। जब बिगड़ी को बनाने वाला तुम्हारा अपना है फिर तुम 'क्या होगा' की चिन्गारियों में क्यों जल रहे हो। होश सम्भालो, विश्वास धारण करो, अपनी शक्तियों को पहचानो और हिमालय की तरह अडोल हो जाओ।

अभ्यास—अपनी दिनचर्या से १५ मिनट निकाल कर बैठो और अपने से पूछो—''मैं कौन और मेरा कौन''—यह ईश्वरीय नशा अडोल बनायेगा और यदि कोई भारीपन मन पर हो, कोई अड़चन मार्ग रोक रही हो उसे प्रभु-अर्पण कर दो।

जीवन पवित्रता की चेतन प्रतिमा हो

जैसे बाप सम्पूर्ण निर्विकारी है, वैसे ही सर्व विकारों की दुर्गन्ध जीवन से निकालने वाले ही बाप समान 'पवित्रता के अवतार' प्रसिद्ध होंगे। जब तक विकारों से युद्ध है, क्रोध अग्नि शीतल नहीं हुई, अहंकार की दुर्गन्ध समाप्त नहीं हुई, लोभ व

मोह के जंजाल नहीं कटे; आत्मा बाप समान निर्मल, निश्चल व शीतल नहीं हो सकती।

तो जबकि धरा का एक अंश भी अपवित्र तरंगों से मुक्त नहीं है, हम पवित्रता के सम्पूर्ण चंदा बनकर, पवित्रता की चाँदनी से धरा को आलोकित करें। हमें यह नशा प्रबल हो कि 'मैं पवित्रता का अवतार हूँ।'

जैसे ब्रह्मा बाबा को अपना सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप व भविष्य देव स्वरूप सामने प्रत्यक्ष रहता था। वे सदा ही अपनी वर्तमान स्थिति की तुलना अपने सम्पूर्ण स्वरूप से करते रहते थे और भविष्य का नारायणी नशा प्रत्यक्ष रूप से उनके नयनों में समाया रहता था, वैसा ही नशा हमारा भी हो।

अभ्यास—१५ मिनट का एकांत लेकर ऐसा अभ्यास करो कि मेरे एक ओर मेरा सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप ब्रह्मा है व दूसरी ओर भविष्य डबल ताज धारी देव-स्वरूप और बीच में मैं... ऊपर से ज्ञान सूर्य शिव बाबा शीतलता की लहरें दे रहे हैं। और इस त्रिमूर्ति स्वरूप में स्थित होकर एकांत में घूमो और देखो अपने सुंदर अनुभव...

ब्रह्मा-सम त्याग व तपस्या हो

त्याग के बिना जीवन में तेज नहीं आता। त्याग के बिना आत्म-बल भी नहीं बढ़ता। ब्रह्मा बाबा के त्याग की कहानी सुनकर मनुष्य के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। धन सम्पत्ति का त्याग ईश्वरीय मिलन के समक्ष कुछ भी नहीं। उनका असली त्याग तो उसके बाद था, जिन्हें अपने लिए कुछ भी इच्छा नहीं थी, जिन्होंने सतत मैं पन का त्याग किया, अहम् जिनके किसी भी अंग को छू नहीं पाया। ऐसी त्याग से सम्पन्न आत्माएँ ही—जो हर तरह का त्याग करने के लिए सदा तैयार हों, जिनकी वृत्ति ही त्याग वृत्ति बन गई हो, जिन्होंने अपनी सभी कामनाएँ कब्र में दफना दी हों—बाप-समान तेजस्वी बनती हैं।

३३वर्ष तपस्या का स्वरूप जैसा ब्रह्मा बाबा का देखा, वैसा अन्यत्र मिलना अकल्पनीय है। ईश्वरीय प्राप्ति होते ही वे मग्न हो गये और एक दिन नहीं, पूरे ३३ वर्ष। जो भी उनसे मिला, उनको मग्न ही पाया। उनकी इस महान तपस्या ने प्राचीन ऋषियों के तप को भी पीछे कर दिया। इसीलिए तो वे सर्व महान ऋषि प्रसिद्ध हुए। यद्यपि उनकी तपस्या का वर्णन बहुत कम हुआ है, परंतु हम अपने दिव्य चक्षुओं से उसका दर्शन कर सकते हैं। उनकी तपस्या का सार था—"शिव बाबा ही संसार।"

ऐसी निरंतर तपस्या ही बाप समान मास्टर सर्वशक्तिवान बनाती है। कम से कम ८ घंटा प्रतिदिन का योग-अभ्यास बाप-समान सर्वोच्च स्थिति बनाने के लिए परम आवश्यक है। और जिनका इतना ऊँचा लक्ष्य हो, यदि उनमें इतनी तपस्या करने का भी साहस नहीं, तो उनका लक्ष्य आधारहीन है। तो नयनों में, बुद्धि में, संकल्पों में एक ही परमपिता समाया हो, एक ही आकर्षण हो, एक ही धुन हो। तब ही ये महान प्राप्ति होगी।

सार रूप में प्रतिदिन लगभग १५-१५ मिनट का समय ५ बार निकाल कर बताई गई बातों में मग्न होने का अभ्यास करें। तो ५ बार का यह शक्तिशाली प्रभाव सारा दिन आत्मा को अव्यक्त व माया-मुक्त रखेगा।

तो आओ बाप का साक्षात् स्वरूप बनकर समस्त विश्व को परमपिता का साक्षात्कार करायें, ताकि समस्त विश्व में सत्य का सूर्य प्रकाशित हो, सबके अंतर्मन आलोकित हों, जग से कलह-क्लेश की होली जल जाए, हर आँगन स्वर्ग-सम सम्पन्न हो और एक बार फिर इस वसुधा पर मनुष्य का जीवन आनन्दित हो उठे। इसके लिए त्याग, तपस्या व सेवा से रूह का श्रृंगार करें, मन की हीन भावनाओं को, द्वेषों को, मन की कुटिलता को और मन की समस्त अग्नियों को मनमनाभव की अग्नि में भस्म कर दें। □

राजयोग भवन भोपाल में कन्याओं का दिव्य समर्पण समारोह। चित्र में गुजरात उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति भ्राता एस.एस. कुरैशी, ब्र.कु. महेंद्र जी, म.प्र. के स्वायत्त शासन मंत्री भ्राता तनवंत सिंह जी के साथ समर्पित हुई कन्याएं उपस्थित हैं।

"प्रतिज्ञा"

□ब्री.के. अवधेश, राजयोग भवन , भोपाल

किसी भी नवीन योजना को क्रियान्वित करने के लिए व कर्म में सफलता पाने के लिए, संस्कारों में परिवर्तन लाने के लिये प्रतिज्ञा की जाती है । प्रतिज्ञा अपने-आपमें बहुत बड़ी शक्ति है । त्याग है । कुर्बानी है । किसी भी कार्य को तत्क्षण कर डालने की एक क्षमता है । पहाड़ को राई बनाना, समस्या को खेल समझना, समुद्र को पाटना ऐसी विकट योजनाओं में सफल होना प्रतिज्ञा की ही कमाल है । प्रतिज्ञा की शक्ति माना **धरत परिए पर धर्म न छोड़िए...** । प्रतिज्ञा सदा शुभ कार्य में सफलता के लिये ही की जाती है ।

प्रतिज्ञा कौन कर सकते हैं ?

प्रतिज्ञा कर लेना बड़ी आसान बात है किंतु प्रतिज्ञा का पालन करना बहुत बड़ी बात है । प्रतिज्ञा वही आत्माएं कर सकती हैं जिनको स्वयं पर पूर्ण विश्वास है । सफलता पाना ही उनका धर्म व कर्म है । इसके अलावा संसार में चार प्रकार के ऐसे लोग हैं जो प्रतिज्ञा कर पालन करते हैं:—

1. **आत्मविश्वासी**—विश्वास के बिना कुछ भी सोचना, बोलना व्यर्थ है । विश्वास खो बैठना, जीवन का अस्तित्व ही समाप्त करना है । विश्वासहीन आत्मा को अपंग कहा जा सकता है । जैसे वह बिना सहारे के चल नहीं सकता ऐसे ही विश्वासहीन आत्मा इतनी कमज़ोर होती है जो दूसरों के सहारे पर जीवन को गाड़ी के समान चलाता है, नहीं तो खड़ा का खड़ा ही रह जाता है । आत्मविश्वास वह जीवन गाड़ी की चाबी है जिससे जीवन-पथ पर हम तीव्रगति से चल सकते हैं । जैसे गाड़ी में सब-कुछ नये यंत्र हों, पैट्रोल हो पर चाबी नहीं है या लगानी नहीं आती है तो बताइए उस गाड़ी की नवीनता की क्या उपयोगिता है।

2. **निर्भीकता**—प्रतिज्ञा का दृढ़ता के साथ पालन वही कर सकता है जिसके अंदर निर्भयता जबर्दस्त भरी हुई है । किसी भी व्यक्ति, वस्तु, मान व अपमान का भय नहीं । निर्भयता वह शक्ति है, गुण है जो बिना किसी को देखे, बिना किसी का सहारा लिए अपनी हिम्मत पर भरोसा रख प्रतिज्ञा के पथ पर दौड़ता रहता है । फिर जिसे नशा हो कि सर्वशक्तिवान परमात्मा मेरा साथी है, कल्याणकारी मेरा गाइड है, फिर किस बात का डर । **"जिसका साथी है भगवान तो क्या करेगा आसुरी शैतान ।"** सभ्यता की सड़क पर निर्भीक आत्मा ही चल सकती है । प्रतिज्ञा करने में (1) सबसे बड़ा

"पिताश्री जी की— दिव्य स्मृति में"

सुनो-सुनो उस दिव्य पुरुष की अद्भुत जीवन गाथा,
भाग्य विधाता ! ब्रह्मा बाबा ! नवयुग का निर्माता।

धर्म बढ़े हिंसा के पथ पर, कांपी धरती सारी,
शांति बन गयी स्वप्न, भड़की विश्वयुद्ध चिनगारी।
संकट के क्षण में किसने है, विश्व शांति दिखलाया ?
खण्ड-खण्ड होती धरती पर कौन एकता लाया ?

एक धर्म, इक भाषा से , सुख शांति जग में लाता,
भाग्य विधाता ! ब्रह्मा बाबा ! नवयुग का निर्माता।

परमपिता शिव ने ब्रह्मा के तन में किया प्रवेश
दुनिया नयी बनानी तुमको दिया उन्हें आदेश
तन-मन-धन कुर्बान कर दिया, पाया ज्यों संदेश
निकल पड़ा सेवा के पथ पर, हरने कलह-क्लेश।

उनकी त्याग तपस्या सेवा का जग है गुण गाता
भाग्य विधाता ! ब्रह्मा बाबा ! नवयुग का निर्माता।

युग-युग पीड़ित कन्याओं, माताओं का सम्मान किया
द्वार स्वर्ग का 'प्रथम गुरु' कह दर्जा उन्हें महान दिया
ओम शांति के अर्थ में देकर विश्व शांति वरदान
राजयोग की राह दिखाकर किया जगत कल्याण।

उनके मन-वाणी-कर्मों से विश्व प्रेरणा पाता,
भाग्य विधाता ! ब्रह्मा बाबा ! नवयुग का निर्माता।

दिन जनवरी १८ का स्मृति दिवस कहलाया
आप हुए अव्यक्त इसी दिन छोड़ पुरानी काया
आज दे रहे फिर भी अपनी दिव्य पालना हमको
श्रद्धा सुमन समर्पित करते, पिता श्री हम तुमको।

सांस-सांस उपकार तुम्हारा, जन-जन का मन गाता
भाग्य विधाता ! ब्रह्मा बाबा ! नवयुग का निर्माता।

—ब्र.कु. सतीश कुमार, आबू

भय तो स्वयं की कमज़ोरी का ही होता है । नहीं पूरा कर पाया तो भगवान नाराज़ हो जायेंगे, साथी नाराज़ हो जायेंगे । इसलिए कदम पीछे हटा लेता है । (2) अगर प्रतिज्ञा का पालन कर लिया तो समाज क्या कहेगा ? समाज का भय होने के कारण आत्मा अपने लक्ष्य से अथवा प्रतिज्ञा से हट जाती है। ऐसे-ऐसे मन के अंदर भय के वशीभूत होने के कारण आत्मा मानसिक रूप से संकुचित, कमज़ोर होती जाती है । अत: हर क्षेत्र में सफलता की कामना रखने वालों के अंदर निर्भीकता का होना अत्यावश्यक है ।

3. विवेकशील—विवेकशील प्राणी उसे कहा जाता है जो हर बात, व्यक्ति, वस्तु को जब तक स्वयं अपनी विवेक की कसौटी पर न परखे तब तक चाहे रूप, पोज़ीशन तथा आयु में कोई कितना भी बड़ा क्यों न हो, हर किसी की बात को सहज स्वीकार नहीं करेगा । क्योंकि ऐसी आत्माएं सदैव अपने मार्ग से विचलित हुआ करती हैं । हर किसी के बहकावे में आने वाली आत्मा का स्वयं से तथा अन्य जनों का भी भरोसा कम होने लगता है कि यह तो बिना पेंदी के लोटे के समान है । कभी इधर, कभी उधर । ऐसा व्यक्ति बातों की कतार तो बहुत लंबी बनायेगा पर फल नहीं खा पायेगा । उसको कीड़े-मकोड़े आदि खराब कर देते हैं इसलिए बुद्धिजीवी उसे ही कहा जाता है जो स्वयं देखे, सुने, खुद कर्म करे और अपने अनुभव, विवेक के आधार पर चले।

4. देश-प्रेमी—जीवन की कुर्बानी बहुत-बड़ी ऊंची मंजिल है, कठिन तपस्या है, जबर्दस्त त्याग है । यह त्याग क्यों, किसलिए, किसके लिये होता है । जहां से, जिसमें सच्चा प्रेम होता है। एक छोटी-सी वस्तु भी हम वहां, उस व्यक्ति को देना चाहते हैं जिससे सच्चादिली स्नेह होता है। तो आज देश के प्रति भी वही आत्माएं अपने जीवन की, बुराइयों की, साधनों की, वैभव व संपत्ति की कुर्बानी करेंगी जिसको अपनी प्यारी मातृभूमि से, स्वदेश से सच्चा प्यार होगा । कहा जाता है ''जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं, वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें **स्वदेश का प्यार नहीं ।''** कितनी माताओं ने अपने सुहाग को समर्पित किया देश की खातिर, कितनी बहिनों ने भाइयों का बलिदान किया, कितनी माताओं ने नूर समान अपने बच्चों का समर्पण किया, कितने हमारे देशभक्तों ने जान की बाज़ी लगा दी ऐसे वीरों से इतिहास भरा पड़ा है । वह भी स्वयं के बल पर जबकि भविष्य उनके सामने स्पष्ट नहीं । आज हम आत्माएं जो स्वयं परमात्मा शिव के आधार पर चल रही हैं, नये विश्व के स्पष्ट दर्शन कर रही हैं, एक जन्म नहीं २१ जन्मों की कमाई कर प्रालब्ध बना रही हैं नर से श्री नारायण व नारी से श्री लक्ष्मी जैसी, इतनी ऊंच प्राप्ति करने जा रही हैं तो इस तमोप्रधान दुनिया की वस्तु, व्यक्ति, वैभव, पदार्थ का त्याग करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करना क्या बड़ी बात है ? अपने अंदर झांककर देखें हमें अपने स्वदेश से सच्चा प्यार है ?

''सच्चाई छिप नहीं सकती, कभी झूठे उसूलों से,
खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज़ के फूलों से ।''

अत: परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माध्यम से सहज ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग द्वारा हम आत्माओं के अंदर इतनी शक्तियां भर रहे हैं जो इस कलियुगी वातावरण में रहते अपने जीवन को संपूर्ण परिवर्तन करने की प्रतिज्ञा करते हैं तथा स्वयं की प्रतिज्ञा बल पर सारे विश्व की बुराइयां छुड़ाने तथा नया श्रेष्ठ जीवन बनाने की प्रतिज्ञा करा रहे हैं और अपने इस जीवन में ''सदा सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'' इस प्रकार अनुभव भी हम आत्माएं कर रही हैं। □□□

नान्दुरा में ब्र.कु. ... आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में अपने विचार प्रकट करते हुए

नान्दुरा: शांति भवन का उद्घाटन ... कर रहे हैं।

'आओ मेरे महावीर बच्चे' – ऐसा कहकर बाबा ने मुझे महावीर ही बना दिया

□ब्र.कु. सुन्दरलाल, एम.ए.बी.एड. (रिटायर्ड शिक्षा अधिकारी, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली)

दिव्य गुणों की और शक्तियों की खान पिताश्री जी का व्यक्तित्व प्रेरणा का स्रोत था। निरंतर शिव बाबा के संग में रहने वाले पिताश्री जी महान, दूरदर्शी थे। उनका एक-एक शब्द दूसरों के लिये वरदान हो जाता। प्रथम मुलाकात में ही बाबा ने कहा : 'आओ मेरे शूरवीर बच्चे आओ।' वह दृश्य इतना दिव्य और अलौकिक और अमिट छाप छोड़ने वाला था कि कैसे प्यार का सागर बाप वरदानों से बुद्धि रूपी झोली को भर रहा है। बाबा बोले कि बाबा तो सुंदर है ही तुम भी बाप के अति सुंदर फूल हो। पिताश्री जी की दिव्य आभा ने मुझे अपनी ओर इतना आकर्षित कर लिया जो मैंने यह संकल्प कर लिया कि मुझे सर्वोत्तम जीवन जीना है। मैंने यह बात कई बार अनुभव की है बाबा जिसके लिये जो भी शब्द उच्चारण करते उनके लिये वह वरदान ही हो जाता। उदाहरण के तौर पर जिस बात को दुनिया असम्भव समझती है, ऋषि-मुनि भी कठिन समझते हैं। बाबा ने मेरे अंदर अपार शक्ति और वरदान दे दिया उस मंजिल को मैंने सहज ही पा लिया। १० दिसम्बर १९६० को बापदादा की प्रेरणा अनुसार मेरा अलौकिक विवाह हुआ था जिस पर बाबा ने हवाई जहाज से एक पत्र भेजा था जिसमें लिखा था जो पवित्रता को अपनाएंगें वह ऊँच पद पाएंगे और जो विकारों में फंसे रहेंगे वह रसातल जाएंगे। इस प्रकार से हमें बाबा के द्वारा कदम-कदम पर श्रीमत मिलती रही और हम पवित्रता के पथ पर आगे बढ़ते रहे।

जब कभी भी बाबा से मधुर मुलाकात का अवसर प्राप्त होता था तो ऐसे अनुभव होता था कि कुछ समय के लिये मैं अपनी देह को एकदम भूल कर उससे न्यारी और बहुत हल्की आत्मा हूँ। साथ ही साथ इन इन्द्रियों से परे बेहद की खुशी एवम् आनंद का अनुभव होता था, जिसके आधार पर पिताश्री जी के तन में अवतरित परम प्यारे शिवबाबा की अनुभूति होती थी।

ज्ञान के सागर शिव बाबा का रथ होने के कारण तथा हम सब में सर्वोच्च अनुभवी होने के कारण ब्रह्मा बाबा से बहुत ही श्रेष्ठ प्रेरणाएं मिलतीं। इनमें से कुछ एक बातें निम्नलिखित हैं :—

१. बाबा द्वारा एकनामी (Economy) की शिक्षा :

मार्च १९६३ में पिता श्री जी दिल्ली में ही थे तथा उन्हीं दिनों पटेल नगर में नये सेवा केन्द्र के उद्घाटन का प्रोग्राम बन रहा था। उद्घाटन के समय शिव बाबा को भोग तो लगाया ही जाता है तो उस अनुसार हम कई दिन पहले ही सोच रहे थे कि भोग के लिए क्या-क्या बनाएंगे। परंतु जब इस बारे में बाबा से बात हुई तो उन्होंने भोग के लिये खर्च करने की राशि मुकरर कर दी जो कि पहले तो हमें बहुत थोड़ी महसूस हुई। परंतु बाबा ने उसका विवरण अर्थात् कौन-कौन सी चीज़ कितनी मात्रा में मंगाएं, यह सब बताया और बाद में हमने महसूस किया कि उतने ही खर्चे में सब कार्य अच्छी प्रकार से हो गया।

२. परिवार के अंग की भासना देना :

मधुबन में प्राय: आश्रम का मकान बनता ही रहता था। जब कभी वहाँ जाना होता तो बाबा साथ में ले जाकर दिखाते कि अभी वहाँ तक भवन निर्माण का कार्य हुआ है और आगे यह करने का प्रोग्राम है। साथ ही साथ बाबा अपने साथ ही भोजन कराते तथा कई बार बाबा के साथ बैडमिंटन, क्रिकेट आदि खेलने का भी अवसर प्राप्त हुआ। इन सबसे बाबा ने हमारे अन्दर अपने आप को इस बड़े ईश्वरीय परिवार का अंग समझने की भासना दी।

३. अथक सेवाधारी बाबा :

मधुबन में प्राय: बाबा के कमरे के सामने हवाई महल में ही हमारा रहना होता। परंतु हम यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाते कि जब सब लोग सो जाते उसके बाद भी जब देखें बाबा के कमरे की लाईट जल रही होती और बाबा भी जगे हुए होते। इसी प्रकार प्रात: भी बहुत जल्दी से वह लाईट जली होती और बाबा भी जगे हुए होते थे। साथ ही साथ हमने यह भी देखा कि इतना वृद्ध शरीर होते हुए भी पिताश्री जी यज्ञ के हर स्थूल कार्य में भी बच्चों के साथ हाथ बटाते।

४. ड्रामा की Point पक्की करानी :

जिस दिन मधुबन में मम्मा ने शरीर छोड़ा था तब पिताश्री जी भी वहीं थे। मैं भी तब वहाँ ही था। जब मम्मा का शरीर रखा हुआ था तो बाबा बच्चों को कहते कि आप सभी बच्चे अच्छी तरह से योग लगाओ। परंतु कुछ देर के बाद जब बाबा ने देखा कि बच्चे अच्छी तरह योग में बैठे हैं तब बाबा ने ड्रामा की पायन्ट को हम बच्चों के सामने दोहराया और कहा कि शिव बाबा भी ड्रामा के अनुसार ही आते हैं और मम्मा का ड्रामा में वापिस आने का होगा तो आयेगी, नहीं तो नहीं आयेगी। इसी प्रकार से जो भी बच्चे उस समय मधुबन में मौजूद थे उन सब की अवस्था को बाबा ने अडोल बना दिया और हम सब के अन्दर ड्रामा की पायन्ट को पक्का कर दिया।

५. भविष्य पद का नशा :

साकार बाबा के द्वारा जब भी हम शिव बाबा की वाणी सुनते या वैसे भी जब उनसे मिलते तो प्राय: यह महसूस करते कि साकार बाबा को सदा अ[illegible]न भविष्य श्रीकृष्ण पद का अथवा स्वयंवर पश्चात् श्री नारायण पद का अत्यधिक नशा रहता है। बाबा कहते कल मैं ऐसा मिचनू बनने वाला हूं।-छोटे हाल में जहाँ पर ही बाबा वाणी चलाते थे उसी के अन्दर सन्दली के निकट लक्ष्मी नारायण का ट्रान्सलाईट का चित्र भी रखा हुआ है परन्तु यदि किसी दिन बच्चे गलती से उसकी लाईट जगाना भूल जाते तो बाबा वाणी के बीच में ही वह लाईट on करवाते और कहते कि यह लक्ष्य तो हर समय सामने रखना चाहिये।

६. कन्याओं माताओं को आगे रखना :

ऐसा भी कई बार देखा कि कितना भी आयु में बड़ा या लौकिक status में बड़ा व्यक्ति जब साकार बाबा से मिलने आता तो बाबा प्राय: उनको बच्चे-बच्चे कह कर सम्बोधित करते। और उनसे थोड़ी बातचीत करने के बाद बाबा कहते कि अमुक कन्या या माता आपको बहुत अच्छा ज्ञान समझाएंगी। इसी प्रकार बाबा कन्याओं, माताओं को बहुत मान देते और सदा उनको आगे ही रखते। □

"कहा करते थे बाबा"

□बी.कु. सूरजमुखी., आगरा

बच्चे ! भगवान को पा लिया और क्या चाहिए... परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले की वो मिल गया तो और क्या चाहिए ? याद है हमें बाबा सदैव कहा करते बच्चे मैं तुम्हारा ओबिडियेंट सर्वेंट हूं, कितनी निरहंकारिता थी बाबा में... सबको प्यार दिया था बाप बनकर, सबका सुख दिया कष्ट हरकर, बाबा के जीवन चरित्र ही आज कवियों की कल्पनाएं हैं, महावीरों की गाथाएं, वेदों के भेद भी यही हैं, शास्त्रों के अर्थ भी । कितनी कल्याण भावना थी उस विशाल हृदय में, जिससे हर दिल को राहत मिलती थी। हमें याद नहीं, न कभी सुना कि एक भी आत्मा बाबा से असंतुष्ट है... सबके प्यारे बाबा यही कहा करते थे इतना प्यार करेगा कौन... उन प्यार के पात्र बच्चों को कहा करते थे बाबा...

□ बच्चे भगवान को पा लिया और क्या चाहिए, परवाह थी एक वह पूरी हो गई अब क्या चाहिए ? जिससे भगवान स्वयं आया हो मिलने उसे कितनी अपार खुशी रहनी चाहिये।

□ जिसे बाबा मिला उसे एक बल और एक भरोसे हो जाना चाहिए, सब जिम्मेदारी जिसकी भगवान ने आकर ली हों उसे सम्पूर्ण निश्चिंत हो जाना चाहिए ।

□ बच्चे ये तन भी अपना नहीं, इसे हमने शिव बाबा से लोन लिया है इसमें ही ममत्व रह गया तो जगत जीत कब बनेंगे ।

□ अब घर जाना है इसलिए जीते-जी मर जाओ, जो यहां Beggar होंगे भविष्य में Big Prince बनेंगे ।

□ कहा करते थे बाबा मैं जाकर श्रीकृष्ण बनूंगा... उनके जीवन में कोई तृष्णा नहीं रह गई थी—कृष्ण बनने वालों के ही मन में तृष्णाएं रह गईं तो बाकी का क्या होगा ?

□ ये ईश्वरीय कार्य मेरा नहीं मैं तो निमित्त हूं, सम्पूर्ण मैं-पन के त्यागी थे बाबा ।

□ सम्पूर्ण फरिश्ता लगते थे बाबा, हंस-चाल चला करते थे बाबा, सबको यही कहा करते थे—बच्चे, हमें कितना ऊंच बाप मिला है तो हमारी चलन कितनी Royal होनी चाहिए, हंस कभी अवगुण नहीं उठाता, गुणों की मूरत दिखा करते थे बाबा ।

□ मांगने से मरना भला—सबसे यही कहते थे बाबा, विश्व का मालिक सबका दाता तुम्हारे साथ है, तुम किससे मांग रहे हो, निश्चिंत रहा करते थे बाबा। □

'पिताश्री जी के अंग-संग रहने का एक अनोखा अनुभव''

ब्रह्माकुमार चन्द्रहास, आबू

इस आत्मा का परम सौभाग्य है कि विश्व की सबसे बड़ी हस्ती, सृष्टि ड्रामा के सबसे पहला नंबर हीरो पार्टधारी, अति प्यारे भाग्यशाली रथ प्रजापिता ब्रह्मा के अंग-संग रहकर उनके सर्वोत्तम पुरुषार्थ तथा दैवी गुणों से सजने की कला देखी और सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण बनने के अद्‌भुत चरित्र देखे तथा नये दैवी कुल की नींव डालने की अनोखी रीति देखी। जो बाबा ने स्वयं उदाहरण बन हम बच्चों को प्रैक्टिकल में करके सिखाया, सिर्फ मुखारबिंद से शिक्षाएं नहीं दीं। वृद्ध अवस्था होते हुए भी हर सेवा में मन्सा-वाचा-कर्मणा उदाहरणमूर्त बने। आज आप सबके सामने उनमें से कुछेक उदाहरण रखता हूं जो हमारे दिल को छू लेने वाले हैं।

बाबा अति निर्माण थे

प्यारे बाबा जितने ऊंचे उतने निर्माण थे। आपने खुद मुरलियों में सुना होगा, एक-एक ज्ञान रत्न उच्चारण करते हुए यही कहते कि यह शिव बाबा कहते हैं। कभी नहीं सुना कि ब्रह्मा बाबा कहते या मैं कहता हूं। इतने तक कहते कि ब्रह्मा से तुमको कोई वर्सा नहीं मिल सकता। शिव बाबा ने इतना ज्ञान रत्नों का कलश ब्रह्मा बाबा के मस्तक पर रखा लेकिन बाबा सदैव अपने को छिपाकर शिव शक्तियों को आगे रखते। सदा कहते—बच्चे तुम सौभाग्यशाली हो, ज्ञान रत्न शिव बाबा तुम बच्चों को आकर सुनाते हैं, मैं तो बीच में सुन लेता हूं। मेरे को भी दलाली मिल जाती है। बाबा ने कभी अन्य गुरुओं की भांति अंधविश्वास में नहीं रखा। सदैव बच्चे-बच्चे कह प्यार से समझाया और सिखाया।

इस ज्ञान से भारत की गरीबी दूर हो सकती है

हमारे प्रश्न-उत्तर करने से बाबा को और ही खुशी होती और प्यार से हर प्रश्न का जवाब देते। एक बार हमने बाबा से रूह-रिहान करते हुए पूछा, बाबा, हम जो सबको कहते हैं इस ज्ञान अमृत से सभी दुख, समस्याएं खत्म हो जायेंगी, लेकिन कई पूछते हैं कि तुम्हारे ज्ञान से गरीबों का पेट तो नहीं भरेगा। गरीबों की तुम क्या सेवा करते हो ? बाबा ने मुस्कराते हुए कहा—बच्चे उनको समझाओ कि हमारा यह प्रैक्टिकल अनुभव है—भले कोई कितना भी गरीब हो लेकिन जब इस ज्ञान को जीवन में धारण करने लगता है तो उसकी गरीबी दूर हो जाती है। क्योंकि ज्ञान मिलने से-१ उसके मन में संतुष्टता आ जाती है जिससे वह हर हालत में खुश रहता है। २. ज्ञान से उसका देह-अभिमान खत्म होता है जिससे वह शरीर निर्वाह के लिए कोई भी कार्य बिना संकोच किये हुए कर लेता है। वह कोई भी काम करके अपना पेट पालन कर लेता है। ३. उनकी अनेक आशाएं खत्म होने से थोड़े में भी गुज़ारा कर लेता है। बाबा कहते बच्चे पेट क्या मांगता है, ८ आने की दो रोटी ही तो मांगता है। ४. ज्ञान मिलने से उनका जीवन पवित्र बन जाता, पवित्रता के कारण परिवार सीमित हो जाता, जिससे वह उसकी पालना सहज ही कर लेता और वह सात्विक भोजन खाता है जिससे हेल्थ भी अच्छी रहती है। गरीब बच्चे तो और ही निश्चिंत रह खुशी-खुशी से अपना भविष्य ऊंचा बना सकते हैं। अगर सभी इस ज्ञान और योग को सीख लें तो भारत से गरीबी खुद-ही-खुद गायब हो जायेगी।

प्यारे बाबा ने सदैव अपने को हम बच्चों का सर्वेंट कहलाया। प्यारी मां बन प्यार से हम सबका लालन-पालन किया। कोई बात में कोई बच्चा यदि जिद करता वा नहीं मानता तो उनको भी बाबा बड़े प्यार से ऐसा समझाते जो उनके विवेक को छू लेता। प्यारे बाबा की निर्माणता का उनके ऊपर इतना असर होता जो उनकी दिल पिघल जाती और खुद ही आंसू बहाये बाबा से क्षमा मांगता। बाबा उन्हें प्यार से गले लगा लेता, जिससे उनको मां के प्यार की भासना आती। बाबा ने अलौकिक मां बनकर हर प्रकार से बच्चों का लालन-पालन किया, सिखाया, दैवीगुणों से सजाया। साथ में बिठाकर भाषण करना सिखाया। फिर कहते बच्चे, तुम तो मेरे से भी तीखे हो, बहुत अच्छा भाषण करते हो। ऐसे कह बच्चों को उमंग-उल्लास देते और फिर पुरुषार्थ में यदि किसी बच्चे से भूल हो जाती तो बाबा फौरन कहते कोई बात नहीं, बच्चे, ड्रामा। आगे ख्याल रखना। कई बार बाबा कहते बच्चे संकल्प-विकल्प तो बाबा को भी आते हैं, माया तो सामना करेगी, उसे योगबल से उड़ा दो। ऐसे हलकाकर बच्चों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते। सदैव अपने को भी हम बच्चों से मिलाकर कहते बच्चे मैं भी

पुरुषार्थी हूं । बूढ़ा बाबा पुरुषार्थ करते, तुम नहीं कर सकते हो ? तुम जवान तो मेरे से भी आगे जा सकते हो।सच में तो बूढ़ा बाबा हम जवानों से भी जवान थे । बच्चों के साथ घूमते, पहाड़ों पर चढ़ते तो बाबा का एक कदम हमारे तीन कदमों जितना होता, सबसे आगे पहाड़ी पर चढ़कर नीचे बच्चों को हांफता देख बड़े हंसते और बांहें पसार कहते आओ बच्चे, देखें कौन पहले आता है। हम पूछते बाबा आप थकते नहीं ? तो हंसकर कहते बाबा को तो डबल इंजन है (बापदादा)। तो बाबा थकेंगे कैसे ! एक बार एक बच्ची ने चिटचैट करते बाबा से पूछा—बाबा आप किस पुरुषार्थ से माला में पहला नंबर आते हो ? तो बाबा बोले देखो, बच्ची को एक टीचर है, वह तो मेरा भी टीचर है ही, लेकिन तुम सब इतने बच्चे भी मेरे टीचर्स हो। बच्ची ने पूछा—बाबा हम कैसे आपकी टीचर हैं ? बाबा ने उत्तर दिया देखो बच्ची, मेरे को सदैव यह विचार रहता है कि जैसा कर्म मैं करूंगा मुझे देख तुम बच्चे फॉलो करेंगे । इसलिए मेरा सदैव अपने ऊपर ध्यान रहता है । आगे में इंजन है तो उनके ऊपर तो बड़ी जिम्मेवारी है ।

बाबा निंद्राजीत थे

बाबा ऐसे अथक निंद्राजीत जो दोपहर हो या रात्रि, कब भी बाबा के सामने जाओ तो फौरन उठकर कहेंगे, आओ बच्चे, कोई काम है। मेरे को नींद थोड़े ही है। हम कहते बाबा,आपको नींद नहीं आती क्या ? तो कहते बच्चे जिनके ऊपर ज़िम्मेवारी है वह कैसे नींद करेंगे। देखो, बाबा ने कितनी जिम्मेवारी दी है। इतनी आत्माओं को स्वच्छ बनाये, शृंगार कर शिव साजन के पास ले जाना है। इस रीति कब बड़ी मां का प्यार देते, कब दलाल बन साजन से सगाई कराते। कब बूढ़ा बाबा ग्रेट-ग्रेट ग्रेंड फॉदर बन शिक्षाओं से सजाते । कब सखा बन हंसाते, घुमाते, खिलाते । बच्चों को उमंग-उत्साह में लाकर आगे बढ़ाते ।

बाबा गरीब निवाज़ थे

कोई नया आता तो उनको भी ऐसे भावात्मक तरीके से समझाते—बच्चे बूढ़ा बाबा कहते हैं यह एक जन्म पवित्र रहो, उनकी नहीं मानेंगे बाबा की दाढ़ी की लाज़ नहीं रखेंगे ? ऐसे प्यार से बात करते जो उनका भी दिल पिघल जाता। गरीब निवाज़ बाबा को खास गरीब-साधारण बच्चे बहुत प्यारे लगते । जब वह मधुबन आते तो बाबा उनकी ऐसी स्वागत करते, हंसाते, बहलाते जैसे कोई बहुत बड़ा वी.आई.पी. आया है। बाबा कहते गरीब साधारण बच्चे बड़े मीठे भोले होते हैं । वह मेरे को बड़े प्यारे लगते हैं । मेरे को एक दृश्य सामने आता है, उन दिनों में मधुबन में कंसट्रक्शन का काम चल रहा था । मिस्त्री-मज़दूर काम करते, तो बाबा चक्कर लगाकर उनको देखते, कहते यह गरीब बच्चे कितनी मेहनत और ईमानदारी से काम करते हैं। मिस्त्री-मज़दूर भी इतना ही बाबा को प्यार-रिगार्ड देते। बाबा को वो ओमशांति कह हाथ जोड़ते। बाबा भी हाथ जोड़ नमस्ते करते। एक बार राखी का दिन था, सभी मिस्त्री-मज़दूरों की छुट्टी थी । ११-१२ बजे का समय था, बाबा मेरे साथ बैठे थे । वहां बैठे दो मज़दूर औरतें सामने आईं, कुछ शर्मा रही थीं, कुछ अटक रहीं थीं। बाबा ने बोला—पूछो बच्चियों को क्या चाहिए ? मैं आगे गया तो उन्होंने धीरे से बोला कि बाबा को राखी बांधनी है । बाबा ने जब सुना तो बड़े प्यार से उठकर आगे आये और बांह आगे कर कहा, बांधो बच्ची । उन्हों की खुशी का पारावार न रहा । बाबा को उन्होंने राखी बांधी । बाबा ने मेरे को कहा बच्चियों को जाकर खर्ची दो । मैं जब वापस आया तो बाबा ने पूछा—कितनी खर्ची दी ? मैंने कहा बाबा दो-दो रुपये दिये । (उन दिनों दो रुपये भी बहुत थे) बाबा ने कहा बस, अरे इतनी बड़ी अथॉर्टी आदिपिता ब्रह्मा को बच्चियों ने कितनी प्यार से राखी बांधी है, इनको तो अशर्फियां देनी चाहिए । उसी समय बाबा ने बुलाकर अपने हाथों से उन्हें १०-१० रुपए और टोली दी । उन्हों को तो खुशी में आंसू आ गये । ऐसे थे हमारे गरीब निवाज़ मीठे बाबा ! मतलब अति प्यारे बाबा के चरित्रों के हम बच्चों को महान बनाने की कला का क्या वर्णन करूं, क्या न करूं ? □□□

मुद्देबिहाल: ओमशांति भवन में बी.के. उषा, बी.के. सुनीता, भ्राता जी.एम. देशमुख, कर्नाटक के जंगलात के मंत्री, भ्राता नवदगी, जिला तथा सत्र न्यायाधीश बंगलौर तथा बी.के. प्रकाश तथा अन्य चित्र में दिखाई दे रहे हैं ।

जठलाना: शोभा-यात्रा का एक दृश्य।

"ब्रह्मा बाबा के जीवन की 16 कलायें"

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में चार विषयों (Subjects) पर पढ़ाया जाता है। वे हैं—ज्ञान, योग, धारणा और सेवा। इन चारों का केंद्र बिन्दु है ब्रह्मा बाबा का जीवन वृत। इसलिए यदि हम ब्रह्मा बाबा की जीवन कहानी को अपने जीवन में उतारें तो शीघ्र ही सम्पूर्ण बन सकते हैं। हम ब्रह्मा बाबा के जीवन की विशेषताओं को १६ कलाओं के रूप में बांट सकते हैं—

१. **सीखने की कला** (Art of learning) : सीखना अर्थात् जीवन में परिवर्तन। शिव बाबा सभी को एक जैसा पढ़ाते हैं लेकिन सभी अपनी शक्ति अनुसार उसको धारण करते हैं। जैसे ब्रह्मा बाबा ने उसी ज्ञान से इतनी प्राप्ति कर ली जो कर्मातीत बन गये लेकिन कई भाई-बहनें बहुत सालों से ज्ञान में चल रहे हैं फिर भी उनमें कोई प्रगति नहीं हुई। इसका कारण क्या है ? उन्हों में मनोवृत्ति बन जाती है कि हमने तो सब सीख लिया, बस यही माया का वार हो जाता है जो सीखने नहीं देता है। ब्रह्मा बाबा इतनी आयु होने के बावजूद भी अपने को समझते थे कि "मैं विद्यार्थी हूं।" इसी मनोवृत्ति ने उनको उच्चता के शिखर पर पहुंचा दिया। तो इस प्रकार सीखने के लिए सतर्कता ज़रूरी है। सीखना माना मान्यता में परिवर्तन करना और यह तब होता है जब सीखने वाली बात का महत्त्व मालूम हो। जैसे बाबा कहते हैं बच्चे तुम्हारा यह जीवन हीरे तुल्य है, माना इस पढ़ाई से हम इतना ऊंचे बने हैं। जब यह मालूम पड़ जाता है तो पढ़ाई में और अटेन्शन बढ़ जाता है। सीखने के लिए प्रलोभन और प्रेरणा की ज़रूरत है। तब बाबा कहते जो नये आते हैं उनको तुम पहले-पहले यहां का लक्ष्य बताओ। जबकि हमें पता है कि विनाश सामने खड़ा है तो जल्दी-जल्दी पुरुषार्थ करना है। सीखने के लिए ज़रूरी है दो मान्यताओं में तुलना। पहले उस बात का मूल्य आंकना अर्थात् मूल्यांकन करना फिर है धारण करना। यदि कोई के जीवन में परिवर्तन नहीं होता है माना उसने सुनी हुई बातों में तुलना नहीं की फिर उससे लाभ है या हानि, यह नहीं देखा इसलिए धारणा भी नहीं हुई। बाबा हमें रोज़ कहते हैं बच्चे जो सुना है उसको रिपीट करो, उससे क्या लाभ है उसको सोचो तो धारणा होगी माना हजम हो जायेगा। सीखने के लिए जिज्ञासा चाहिए। बाबा पढ़ाई के महत्त्व को बताते हुए कहते कि बच्चे जिसको मुरली से प्यार है माना मुरलीधर से प्यार है। तुम्हारी पढ़ाई मुरली है इसलिए पढ़ाई मत छोड़ो। इसी तरह बाबा बूढ़ों को भी जब बच्चे-बच्चे कहते हैं तो उनमें पढ़ाई के प्रति एलर्टनेस (सतर्कता) आ जाती और जो जवान होते हुए भी कहते कि हमने तो सब सीख लिया, तो बाबा कहते यही बूढ़े हैं।

२. **व्यवहार करने की कला** (Art of dealing or Behaviour) : मम्मा कहती—"बच्चे गिरते भी अपने कर्मों से हैं और चढ़ते भी अपने कर्मों से हैं।" माना सबसे बड़ी चीज है—कर्म। अब दैवी संस्कार, नये संस्कार कैसे बनें ? कर्मों से ही संस्कार बनते हैं। सतयुग में हमारे दैवी संस्कार होंगे, वे यहां से ही हमें बनाने हैं। कोई कहते ज्ञान सुनते हैं, योग भी लगाते हैं लेकिन पांच विकारों पर कन्ट्रोल नहीं है या व्यवहार में कोई अंतर नहीं आया है। इसका अर्थ है सुना ही नहीं। कहा जाता है कि—Handsome is that who handsom does. (सुन्दर वह है जो सुन्दर कार्य करता है) तो हमारा व्यवहार ऐसा हो जिसमें निःस्वार्थ स्नेह, मिठास और सुधार हो। बाबा का व्यवहार ऐसा था जिससे उनको देखकर दूसरों के जीवन में, व्यवहार में सुधार आता था। हमारे हर कर्म में सेवा समाई हुई हो तो सेवा अर्थ किया हुआ कार्य ही श्रेष्ठ कार्य है।

३. **विश्राम या निश्चिन्त रहने की कला** (Art of Relaxation) : विश्राम तब होता है जब इस देह से न्यारे होते हैं। जैसे जब हम सोते हैं तब आत्मा देह से न्यारी हो जाती है—यह भी आत्मा को आराम मिलता है। लेकिन राजयोग द्वारा आत्मा जब शरीर से न्यारी होती है तो वह है सतोगुणी आराम। असोचता स्थिति से हम न्यारा प्यारा भी बनते हैं और आराम भी अनुभव करते हैं। यही स्थिति बाबा के अंदर थी। जैसे मुरली में बाबा कहते हैं—बनी बनाई बन रही अब कुछ बननी नाहि। लेकिन फिर भी अलर्ट रहते। कोई भी विघ्न पड़ता तो बाबा कहते 'नथिंग न्यू'। बाबा के स्वरूप में मुस्कराहट होती और हमारे चेहरे पर ह्रास होता। इसलिए ऐसा समझना है कि करनकरावनहार बाबा है, हम तो निमित्त हैं, इसे ही ज्ञान में

निश्चय कहते। बाबा ही सब कुछ कराता है—इस निश्चय से हम सदा निश्चिंत रह सकते हैं। यही निश्चिंत रहने की कला बाबा में थी। बाबा कहते—पास्ट इज पास्ट, सीन समाप्त हो गई फिर उसका चिंतन मत करो। बाबा यह भी बताते कि किसको भूलना है और किसको याद करना है। किसी भी आत्मा को याद नहीं करना है क्योंकि वो तो दु:ख का ही सागर है। तो उसे भूलना है और जो सुख का सागर शिव बाबा हैं, उसे याद करना है। बीमारी में भी बाबा, "कर्मों का हिसाब-किताब है", यह सोचकर सिर्फ भूलते ही नहीं बल्कि उसको सेवा का साधन बना देते। जैसे एक बार बीमारी में डॉक्टर आया तो बाबा ने डॉक्टर से पूछा— हाऊ आर यू,डॉक्टर? (How are you, Doctor?)डॉक्टर को पेशेंट की इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर बाबा ने सेवा शुरू की। स्वस्थ्य रहने का अर्थ बताया स्व+अस्थ। स्व माना सोल कानशेस और अस्थ माना स्थिति। तो जब आत्मिक स्थिति में हैं माना ही स्वस्थ है। फिर बाबा बताते—बीमारी में कोई हालाचाल पूछने आये तो हम रो करके नहीं कहें कि हिसाब-किताब पूरा कर रहे हैं, नहीं। हिसाब-किताब की बात अंदर में समझकर संतुष्ट रहें, खुश रहें। निश्चय से निश्चिंतता आती है। बाबा ड्रामा को सामने रख हर स्थिति में एकरस रहते, माना निश्चिंत रहते, आराम में रहते। बाबा कहते बेगमपुर के बादशाह हो, कापारी खुशी में रहो। जिसको कोई देखकर पूछे कि आपको इतनी खुशी कहां से आई।

४. **जीने की कला** (Art of living) : ज्ञान में आने से पहले बाबा राजाओं से मिलते थे, उनका जीवन पहले क्या था। परंतु ज्ञान में आने से ही सादगी आ गई। बाबा कहते—'**सादा जीवन उच्च विचार**।' खर्च कम करो लेकिन चीज ज्यादा समय चले। खाने, पहनने और रहने के सम्बन्ध में यह नहीं कि हमारे कारण दूसरों को परेशानी हो। बाबा यहां तक कहते थे कि बच्चे स्टेशन पर ज्यादा भाई-बहिनों का आना जरूरी नहीं। फूल वगैरा भी लाकर शो नहीं करना है। वह पैसा सर्विस में लगाओ। तो बाबा की वह सिम्पलिसिटी ही शो करती थी। पैसा खर्च करके शो नहीं करना। बाबा इतने सिम्पल थे—जब बच्चे ज्यादा आ जाते तो बाबा कहते, बच्चे,मेरे पास भी आकर सो सकते हो। जबकि बाबा का कमरा कितना छोटा था। बाबा की लाइफ बच्चों के लिए थी। अपने खाने में से निकालकर दूसरों को देना—कितनी बड़ी सेवा बाबा ने की। यही कारण है कि आज कोई नये आते हैं तो वे ज्ञान तो देरी से समझते परंतु यहां का त्याग, सेवाभाव देखकर ही प्रभावित हो जाते। बाबा को देखकर लोग संतुष्ट ही नहीं होते बल्कि अपना जीवन ही न्यौछावर कर देते थे—तो हमें भी देखना है कि हमारे से कितने लोग संतुष्ट, खुश हैं ? फिर आती है स्वच्छता। बाबा कहते—Cleanliness is next to Godliness. यह भी बाबा के जीवन में देखा कि खर्च कम स्वच्छता ज्यादा। जो आज भी मधुबन में प्रभावित कर रही है। फिर बाबा कहते अपना जीवन ऐसा चलाओ जिससे किसी को दु:ख न हो। कर्म नियमपूर्वक हों लेकिन कष्ट देने वाले न हों। अपना काम स्वयं करो तो दूसरों को कष्ट नहीं होगा और मतभेद भी नहीं होगा। फिर आती है मांगने की आदत—कई समझते हैं हम तो यज्ञ के लिए मांग रहे हैं, इससे तो देने वाले का कल्याण ही होगा। लेकिन बाबा कहते मांगने से मरना भला। बाबा तो यहां तक कहते कि कोई सम्बन्धी शिवबाबा को पहचानने बगैर लौकिक सम्बन्ध से दे रहा है तो भी लेना नहीं है क्योंकि अभी का लेना भविष्य में २१ जन्म तक मल्टीप्लाई करके देना है। तो हम ले कैसे सकते हैं। फिर बाबा के सामने प्रतिकूल परिस्थितियां भी बहुत आई—लेकिन बाबा ने उनको खुशी-खुशी से पार किया लेकिन मांगा नहीं। हम देखते हैं—संसार में श्रेष्ठ व्यक्ति उसको कहते हैं जो कोई नया आविष्कार करता है। जैसे कोई ने हिमालय पर चढ़ाई की, बिजली आदि का आविष्कार किया या एटम बम का आविष्कार किया—तो उसका नामाचार होता है। लेकिन बाबा ने तो नई दुनिया ही बना दी। ऐसा संसार में कोई भी व्यक्ति नहीं होगा। तो अब हमें भी ऐसा ही जीवन बनाना है।

५. **परिवर्तन करने की कला** (Art of Transformation or Moulding) : बाबा कहते—धरत परिये धर्म न छोड़िये। एक बार समझ लिया कि स्वधर्म क्या है, स्वलक्ष्य क्या है तो मोल्ड होना है। यह भी ब्रह्मा बाबा के जीवन में देखा। पहले दिन ही साक्षात्कार हुआ—"अहम् चतुर्भुज ततत्वम्"। यह तुम हो। बस उसी दिन से परिवर्तन हो गया। जो बार-बार कहलवाते हैं वे मनुष्य होते। तीव्र पुरुषार्थ का मतलब ही है—तीव्र परिवर्तन। बाबा कहते आप ही आधारमूर्त और उद्धारमूर्त हो। जैसे कोई काम किसी एक व्यक्ति के कारण रुका हुआ हो और उसको कहा जाता है कि इतना जरूरी काम तुम्हारे कारण से रुका हुआ है तो वह व्यक्ति कितनी जल्दी से रियलाइज करके पूरा करता है। उसी तरह हम बच्चे बाबा से पूछते कि बाबा सतयुग कब आयेगा ? तो बाबा कहते तुम्हारे कारण ही रुका हुआ है। तो विनाश के लिए बाबा से पूछो नहीं कि विनाश कब होगा। इससे अच्छा है—हम जल्दी-जल्दी पुरुषार्थ में लग जाएं।

६. **अपना बनाने की कला** : बाबा के सामने कैसा भी बच्चा आता,बाबा कहते तुम तो बहुत बड़ा कार्य कर सकते हो।

बाबा निराश आत्माओं में भी आशा उत्पन्न कर देते। कैसा भी कोई गांव का, अनपढ़ हो, गरीब हो, बाबा उससे ऐसे मिलते जैसे यह भी कोई बहुत बड़ा वी.आई.पी. है। मधुबन में जो भी आते बाबा उसे रिसीव करते तथा सीऑफ करते। गो सून, कम सून की टोली भी यहां से ही शुरू हुई। भेजने के समय बाबा गीत बजवाते—भगवान तुम्हारे घर का श्रृंगार जा रहा है... जिससे सभी अपने को महान अनुभव करते। इसके साथ-साथ बाबा मार्ग प्रशस्त भी करते थे—जिससे सभी को "अपना घर है", ऐसी अनुभूति होती थी। मधुबन आकर बाबा से मिलकर सभी अपने को ही भूल जाते। छोटे-छोटे बच्चों तक का दिल बाबा ऐसा जीत लेते जो वे घर जाने के समय मधुबन में छिप जाते। दुनिया में तो गुरु और शिष्य होते, छोटे बड़े का भेद होता। लेकिन यहां बाबा से मिलकर सभी हल्का फील करते, डर नहीं लगता लेकिन ऐसा महसूस होता कि पहले भी बहुत बार मिले हैं। बाबा सिर्फ ज्ञान और योग ही नहीं सिखाते बल्कि पारिवारिक फीलिंग देते। जैसे अंगूर तो सब शहरों में मिलता है फिर भी बाबा सभी के लिए भेजते। किसी को बर्थ डे की टेलीग्राम भी कर देते। जैसे जब कोई फाउन्डेशन डालते हैं तो पीतल आदि सब कुछ डालते हैं, वैसे ही ज्ञान और योग के साथ यह सब भी चाहिए। नहीं तो सेन्टर फलीभूत नहीं होता। बाबा बच्चों की महिमा इतनी करते जो उनके गुणों का और विकास हो जाता और वही कमाल करके दिखाता। बाबा बच्चों को अंगुली पकड़कर घर दिखाते, स्टॉक दिखाते, साथ में खाना खिलाते। बच्चा सर्विस पर जाता तो उसकी जेब में बाबा ड्राइफ्रूट भर देते। बाबा राझू-रमजबाज था, बच्चों को अपना बनाने का तरीका बाबा जैसा कोई नहीं जानता।

७. **स्वस्थ्य रहने की कला** (Art of keeping Healthy) :बाबा कहते शरीर ठीक है तो सेवा कर सकते हो। पहली बात—हेल्थ बनाने के लिए खुशी चाहिए जो कि ज्ञान से मिलती है। दूसरा भोजन फ्रैश। रात का बचा हुआ बासी भोजन खाने को बाबा मना करते, क्योंकि उसमें रात्रि के अशुद्ध वायब्रेशन आ जाते हैं। बाबा बच्चों को पहाड़ियों पर घुमाने के लिए भी ले जाते, जिससे फ्रैश हवा मिलती। इस तरह हेल्थ बनाने का ज्ञान भी बाबा देते थे। जैसे फैक्ट्री में एक मेन चीज का उत्पादन होता, साथ-साथ एकस्ट्रा चीजें भी बन जाती। वैसे ही बाबा ज्ञान और योग के साथ-साथ यह सब भी सिखाते थे। बाबा कहते—स्वास्थ्य के लिए दवा के साथ-साथ सबकी दुआयें भी लेते रहो।

८. **पत्र लिखने की कला** (Art of letter writing) : पत्रों से उसके मन की मनोवृत्ति का पता चलता है। बाबा के पत्र जीवन में उत्साह पैदा करने वाले होते। बाबा कोई को भी किसी कमी की ओर ध्यान खिंचवाते तो पहले उसकी प्रसंशा करते फिर अच्छे ढंग से सुनाते, जिससे दर्द न हो। बाबा पत्र ऐसे लिखते जो बार-बार पढ़ने की इच्छा होती। बाबा पत्रों से ही अपना बना लेते थे। पत्र पढ़कर आत्मा न्यौछावर हो जाती।

९. **पब्लिसिटी या नामाचार करने की कला** (Art of Publicity) : बाबा कहते जैसे बिजनैस में सैम्पल दिखाया जाता है, वैसे ही ज्ञान में लोगों को स्वरूप बनकर, सैम्पल बनकर दिखाओ। तो जिज्ञासू खुश होंगे और आफिस में, समाज में, परिवार में प्रशंसा करेंगे और सभी को लेकर आएंगे। इस तरह बिना खर्च पब्लिसिटी हो जायेगी। बाबा बताते सभी को बाप का परिचय दो, घरों पर, गाड़ियों पर बोर्ड लिखकर लगा दो। ऐसे-ऐसे पब्लिसिटी करने की भी शिक्षा बाबा देते जिससे शिव बाबा का नाम बाला हो।

१०. **हास्य कला या विनोद कला** (Art of Entertainment) : ज्ञान के बीच-बीच में बाबा हंसाते बहलाते भी थे। हंसी-हंसी में आटे की गोली को ताजी टोली कहकर बच्चों को खिला देते,लकड़ी के पिस्ते बादाम बनवाकर हंसी-हंसी में खिलाते। एक बार बाबा कुछ बच्चों के साथ पहाड़ों से सूखी लकड़ी और चेरी आदि लेकर आये और मम्मा की पूजा करने लगे... इस तरह बाबा खूब हंसाते, बहलाते भी रहते। यह भी उनमें विशेष कला थी।

११. **नेतृत्व कला** (Art of Leadership) : नेता का कार्य होता है जन-समुदाय को जागृत करके आगे बढ़ाना। बाबा ने ऐसा काम किया जो हर एक लीडर या टीचर बन गया। बाबा के एक लाख, ६० हजार बच्चे सभी टीचर हैं। बाबा सभी को बिजी कर देते। बुद्धि जब रचनात्मक कार्य में लग जाती तो संघारात्मक कार्य समाप्त हो जाते। जैसे पत्थर पानी की लहरों से पूजने योग्य हो जाता वैसे ही यहाँ सेवा दूसरों की करते-करते लायक बन जाते। हरेक को बाबा ने काम देकर उसे आगे बढ़ा दिया।

१२. **पालना करने की कला** : बाबा बताते प्रदर्शनी लगाओ फिर थक कर सो नहीं जाओ, उसकी पीठ करो तब फल निकलेगा। यदि कोई जिज्ञासु किसी कारण से नहीं आता है तो दूसरे जिज्ञासु की ड्यिूटी लगा दो, मुरली भेजो, पत्र भेजो, टोली भेजो या कोई न कोई कार्य दे दो तो सम्पर्क में आता रहेगा।

१३. **समाने की कला** : बाबा के जीवन में देखा कि यदि विश्वास से कोई बच्चा अपनी बात बाबा को सुनाता तो

बाबा उसको सागर की तरह समा लेते। दूसरों तक नहीं पहुंचने देते। इससे सभी खुले मन से अपनी बात बाबा को सुना देते थे। यह भी कला बाबा में थी।

१४. **बेकार को अच्छा बनाने की कला** (Art of making Waste into Best) : लोग वेस्ट लोहे को, सोने को गलाकर नया रूप दे देते हैं। वैसे ही बाबा पुराने संस्कार, पुरानी आदतों को समाप्त कराए अच्छी आदत बना देते। सारी पतित दुनिया को पावन बनाने का शुभ संकल्प रहता। घर की कोई स्थूल चीज हो उसे भी बाबा नया रूप दे काम लायक बना देते थे।

१५. **पढ़ाने की कला** (Art of Teaching) : पढ़ाई के सम्बन्ध में पहली बात स्थान तथा वातावरण की होती है। साफ-सुथरा और शांत वातावरण मधुबन को बाबा ने पढ़ाने का स्थान चुना। समय भी अमृतवेला, जिसमें मन बिल्कुल फ्री रहता है। पढ़ाने से पहले योग करवाते और गीत बजता। अगरबत्ती भी जलती होती, इससे मन की अनुचित स्थिति हो जाती। भगवान का इतना ऊँचा ज्ञान बाबा एकदम सरल करके सुनाते जो गांव के अनपढ़े भी समझ लेते। बाबा की शिक्षा में अनेक विषय हैं लेकिन बाबा ऐसे पढ़ाते जो लगता था एक ही विषय पढ़ा रहे हैं और कहानी के तौर पर पढ़ा रहे हैं। बाबा की शिक्षा ऐसी थी जो विद्यार्थी और टीचर के बीच नजदीकपन, साथ-साथ गम्भीरता भी होती। सभी का समन्वय होता। बाबा के शब्दों में हीट भी होती तो मिठास भी। और वे शब्द ठिकाने पर जाकर लग जाते। बाबा को कोई बात सुनानी होती तो जनरल क्लास में सुनाते जिससे जिसकी बात होती वह स्वयं को बदल लेता। बाबा अपनी चलन से, दृष्टि वृति, व्यवहार से पढ़ा लेते। बाबा की भाषा में रस भी है, अथार्टी भी है और शब्दों में शक्ति भी है।

१६. **प्रशासन करने की कला** : एक नई दुनिया की स्थापना करना, एक-एक के संस्कार को बदलना, कितना कठिन कार्य है। बड़े से बड़ा कलाकार वह जो थोड़े से साधन से बड़ा कार्य करे। बाबा के जीवन में था—कार्य शुरू करो, साधन स्वत: जुट जायेंगे। बाबा के जीवन में साम्यवाद देखा। जिसको जितनी ज़रूरत उस अनुसार प्राप्ति, बाबा डिग्री वालों को वैसा ही काम देते। हरेक को चांस देते। यहाँ काम सभी मांगते हैं, क्योंकि यहाँ काम को सेवा और सेवा को भविष्य की प्राप्ति कहते। यहाँ कोई बॉस या मैनेजर नहीं, रोब नहीं। लोग वर्क को लेबर समझते यहाँ वर्क को गुड लक समझते। बाबा के प्रशासन में बंद वा छुट्टी नहीं। □

भुज-कच्छ में स्वर्णिम युग आध्यात्मिक मे के समापन-समारोह में भ्राता एम. श साहिब, कैलेक्टर अपने विचार प्रकट क हुए।

भुवनेश्वर: ब्र.कु. जगदीश चंद्र जी के उड़ीसा आगमन पर स्थानीय सेवाकेंद्र पर पत्रकार सम्मेलन रखा गया। पत्रकार। ब्र.कु. बहिनें, भाई तथा भ्राता जगदीश जी चित्र में दिखाई दे रहे है।

संपूर्ण आरोग्य को प्राप्त करने की कला

अंतर्राष्ट्रीय होलस्टिक हेल्थ कॉन्फ्रेंस से सम्बंधित

□ डॉ. गिरीश पटेल (बम्बई), चिकित्सा मनोवैज्ञानिक

हर मानव अपने आपको तंदुरुस्त रखना चाहता है। प्रायः लोग रोग का न होना ही तंदरुस्ती का प्रमाण मानते हैं। यह मान्यता गलत है, क्योंकि बीमारी के कुछ चिन्ह ही वैदकीय पद्धति से पहचाने जाते हैं। इसलिये यह रोग ऐसे होते हैं जैसे हिमपर्वत, जिसका पौना हिस्सा पानी के अंदर होता है और उसका कुछ हिस्सा ही पानी के ऊपर दिखाई देता है।

वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन (World Health Organization) ने आरोग्य की यह व्याख्या दी है कि आरोग्य एक ऐसी स्थिति है जिसमें शारीरिक, मानसिक व सामाजिक क्षेत्र में सम्पूर्ण रूप से स्वास्थ्य हो। सिर्फ कमज़ोरी या बीमारी के न होने को ही सम्पूर्ण आरोग्य नहीं कह सकते।

'आरोग्य के विभिन्न क्षेत्र के आपसी सम्बंध' के बारे में चर्चा करने हेतु यह विषय 'अंतर्राष्ट्रीय संपूर्ण आरोग्य अधिवेशन' (International Holistic Health Conference) के लिये चुना गया है। यह अधिवेशन माऊंट आबू में फरवरी, १९८७ की १५ से १७ तारीख तक आयोजित किया गया है।

शारीरिक तंदरुस्ती के लिये गहरी संप्रमाण नींद, संतुलित आहार और आरोग्यदायक साकारात्मक विचारों की आवश्यकता है। इस प्रकार का नियमित जीवन शारीरिक वजन, श्वासोच्छ्वास, रक्तचाप आदि का प्रमाण रखती है। बीमारी का जन्म और उसके प्रसार को रोकने की हमें हर प्रकार से मेहनत करनी है।

मानसिक स्वास्थ्य को आरोग्य का एक महत्वपूर्ण अंग माना गया है। क्योंकि मानसिक स्थिति ही व्यक्ति के शारीरिक कर्मेन्द्रियों की कार्य-विधि पर तुरंत असर करती है। मानसिक आरोग्य का मतलब सिर्फ मन की बीमारी का न होना ही नहीं बल्कि उसके समूचे व्यक्तित्व का उत्थान और उसका योग्य भावनात्मक व्यवहार है जिससे वह अपने संगी-साथियों के साथ मिल जुलकर जी सके। विलियम सी. मेनिनगर 'द मेनिनगर फाउन्डेशन', टोपेका, कानसास (U.S.A.) ने मानसिक स्वास्थ्य को परखने के लिये निम्नलिखित मापदंड कुछ प्रश्नों के रूप में सूचित किया है—

१. क्या आप सदा चिंताग्रस्त रहते हैं ?
२. कुछ अनजान कारणों से एकाग्रचित होना आपको मुश्किल लगता है ?
३. दु:ख का कारण न होते हुए भी क्या आप सदैव दु:खी रहते हैं ?
४. आपको गुस्सा बार-बार और शीघ्र आता है ?
५. आपकी कार्यक्षमता की कमी का कारण आपकी मानसिक स्थिति में आशा-निराशा के अधिक उतार-चढ़ाव हैं ?
६. अनिद्रा से आप पीड़ित हैं ?
७. मानव-समूह में रहना आपको सदा ही पसंद नहीं आता ?
८. हर दिन कार्य में बदल होने से आप बेचैन होते हैं ?
९. क्या आपके बच्चे आपको परेशान करते रहते हैं ?
१०. आपको बिना किसी कारण के डर लगता है ?
११. आप हमेशा सच्चे हैं और दूसरे गलतियां करते रहते हैं ?
१२. क्या आपकी पीड़ा की वजह कोई डॉक्टर नहीं बता सकता ?

उपरिनिर्दिष्ट प्रश्न मानसिक कमजोरी का प्रमाण दर्शाने वाले मुख्य संकेत रूप हैं। डॉ. मेनिनगर कहते हैं कि अगर इनमें से किसी भी प्रश्न का उत्तर 'हां' में है तो उस व्यक्ति को मदद की जरूरत है। आध्यात्मिक ज्ञान सकारात्मक विचार के लिये सहायक बनता है और तनावयुक्त वातावरण में व्यक्ति का व्यवहार उचित बना देता है। इस विधि से रूहानी ज्ञान और योग का अभ्यास विपरीत परिस्थिति में भी मानसिक संतुलन बनाये रखने में मदद करता है। वह अपनी निंदा को सुनकर अपने अवगुणों को सुधारता है। उस पर क्रोध, निराशा, मोह, भय आदि का प्रभाव नहीं पड़ता। क्षणिक सुखों को देखकर मन को कमजोर करनेवाली अहितकारी आदतों से वह सदा ही दूर रहता है। आध्यात्मिकता पर आधारित सकारात्मक विचार मानव को उसकी मानसिक स्थिति को श्रेष्ठ, संतुलित तथा एकरस बनाने में मदद करते हैं।

सुख-शांति और स्नेह-सम्पन्न वातावरण बनाने के लिये आवश्यक है—मानव का सामाजिक जीवन का स्वास्थ्य। सामाजिक स्वस्थ्य व्यक्ति अपने माता-पिता के प्रति अपनी सभी जिम्मेदारियां निभाता है। वह अपने बच्चों की उन्नति के लिये

सदा प्रयत्नशील रहता है। पारिवारिक जीवन को सुख-शांतिमय बनाने में वह सहयोगी रहता है। वह अपने मित्रों एवं स्नेहीजन को संतुष्ट रखता है। समाज को होनेवाली हानि को रोकने का प्रयास करता है। वह अपने साथियों की सेवा करता है जो उसके सुखी व शांतिमाय जीवन का आधार है। समाज-घातक कृत्यों को रोकने की वह कोशिश करता है। अतः उपरिनिर्दिष्ट विशेषतायुक्त मानव जीवन के लिये आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों की पहचान होना अत्यावश्यक है।वह दिनों दिन जीवन में आनेवाली परिस्थितियों में भी सफलता, समाधान और सुख की अनुभूति करता है। व्यवसायिक स्वास्थ्य भी एक ध्यान देने योग्य विषय है। दिन के कई घंटे व्यवसाय के स्थान पर व्यतीत होते हैं। जिससे सम्बंधित अनेक बातें मानसिक स्थिति पर असर करती रहती हैं। एक ओर कार्यकारों का आपसी सम्बंध और दूसरी ओर वरिष्ठ अधिकारियों से सम्बंध। व्यवसायिक असंतुष्टता, असुरक्षितता, असमाधान कारक सम्बंध, भावनात्मक तनाव आदि बातें कार्य कर के स्वास्थ्य को कमजोर बनाती हैं। हेनी यार्क और पार्क उनके टेक्स्ट बुक ऑफ प्रिवेन्शन एण्ड सोशियल मेडीसीन में कहते हैं कि मानसिक समस्या शारीरिक व रासायनिक समस्याओं से अधिक खतरनाक एवं महत्वपूर्ण हैं।

सम्पूर्ण सुस्वास्थ्य के लक्षण की संक्षिप्त रूपरेखा के अनुसार हम यदि स्वयं का विश्लेषण करें तो मालूम होगा कि हमारे में सम्पूर्ण आरोग्य की हर प्रकार की सम्पन्नता नहीं है। अर्थात हमारे में स्वास्थ्य की पूंजी की कमी है। मानव का आरोग्य उसकी एक जीवंत शक्ति है। यह शक्ति परिवर्तनशील है। इस शक्ति की कमी होने से व्यक्ति का आरोग्य नष्ट होकर वह मृत्यु को पाता है। अतः हमारा ध्येय है सम्पूर्ण आरोग्य को प्राप्त करना।

मनोवैज्ञानिकों का यह विश्वास है कि तनावपूर्ण परिस्थिति का मुकाबला करने की सही विधि यह है कि तनाव को बरदाश्त (सहन) करने की शक्ति को बढ़ायें और तनाव की तीव्रता को कम करें। इस प्रकार, विश्रांति की अनुभूति से और तनावपूर्ण घटनाओं के प्रति दृष्टिकोण को बदलकर उस तनावपूर्ण परिस्थिति का निवारण किया जा सकता है। कैलिफोर्निया के डॉ. डेविड फिंक न्यूरोसायक्याट्रिस्ट (Neuropsychiatrist) लिखते हैं कि शिथिलिकरण (Relaxation) करने से भावनाएं रुकती हैं, जो भावनायें आंतर्मस्तिष्क और बाह्यमस्तिष्क को बुरा व्यवहार करने के लिये उकसाती हैं। कला और आरोग्य विश्राम पर आधारित हैं। तनाव पर संशोधन करनेवाले प्रमुख संशोधक डॉ. हेन्स सेलि व्यक्ति के व्यवहार को महत्व देते हैं। दवाई और अन्य तंत्रों का आधार लेने के बजाय ऐसी परिस्थितियों को नियंत्रित करने की और भी एक अच्छी विधि है। मन की मान्यताएं निश्चित करती हैं कि किसी बात को हम आनंददायी अनुभव करते हैं या दुःखदायी। आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने से ऊपर बताये हुए लाभ सहज होते हैं। मेरे राजयोग के अनुभव अनुसार नीचे बतायी हुई विशेषतायें आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने के लिये आवश्यक है। एक योगाभ्यासी व्यक्ति को यह स्मृति रहती है कि मैं एक अति सूक्ष्म, अनादि-अविनाशी, चैतन्य आत्मा हूं, जो इस जड़ शरीर से न्यारी हूं। वह कर्म करते हुए भी आत्माभिमानी स्थिति में रहता है। शांति, प्रेम, आनंद, पवित्रता और शक्ति की गहरी अनुभूति के कारण वह सदा मानसिक तनाव से और बुरी आदतों से मुक्त रहता है। उसे सर्व आत्माओं के पिता परमात्मा का सत्य और सम्पूर्ण परिचय रहता है। इसलिये उसका सम्बंध किसी जाति, सम्प्रदाय व रंगभेद से नहीं होता। क्योंकि उसमें विश्वबंधुत्व की भावना रहती है। सर्वशक्तिमान से निरंतर बुद्धियोग रहने से जो शक्ति प्राप्त होती है वह श्रेष्ठ कर्मों के रूप में परिवर्तित होती है। वह आत्मा स्वयं तथा अन्य को भी निराकारी, निर्विकारी और निरअहंकारी अनुभव करेगी। परिणामस्वरूप दुनिया की किसी बात का उस पर प्रभाव नहीं पड़ सकता। उसे काम, क्रोध आदि विकार स्पर्श नहीं कर सकते। इस प्रकार, वह पूर्ण रूप से आध्यात्मिक उन्नति को पाता है। परिवार और समाज के प्रति वह अपनी ज़िम्मेदारियां निभाता रहेगा। आध्यात्मिक स्वास्थ्य सम्पूर्ण स्वास्थ्य का आधार है। आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने पर मानसिक और सामाजिक आरोग्य को प्राप्त करना मुश्किल बात नहीं, साथ-साथ शारीरिक सुस्वास्थ्य बनाये रखने का लाभ भी। □

भावानुवाद : ब्र.कु. रश्मि बहन (गोरेगांव)

मुलुंड (बम्बई): ब्र.कु. राजावंती भ्राता रविंद्र कुमार जैन, प्रसिद्ध संगीत निर्देशक को सेवाकेंद्र पर ईश्वरीय संदेश देते हुए।

आइये ! अनुमान से बचें...

□ब्र.कु. उर्मिला., चंडीगढ़

परमप्रिय पिता परमात्मा से मिलने से पहले हम सभी भक्त थे और भक्ति में हमारे अंदर दो तरह की अनुभूतियां थीं। एक तरफ हम देह, कुल, शिक्षा, जाति, रूप आदि के आधार पर दूसरों से अपने को श्रेष्ठ समझ लेते थे जिसे दूसरे शब्दों में Superiority Complex कहा जा सकता है और दूसरी तरफ देवी-देवताओं की जड़-मूर्तियों के सम्मुख जाकर अपने को दीन-हीन, पापी, कपटी, कामी सिद्ध करते थे जिसे Inferiority Complex कहा जा सकता है।

परमात्म-ज्ञान मिलते ही इन दोनों ही प्रकार की भावनाओं से निकलकर हम वास्तविक स्वरूप की तरफ बढ़ना शुरू कर देते हैं । अर्थात् न किसी से उच्च न किसी से नीच । परम पिता परमात्मा की एक अविनाशी संतान होने के नाते सभी मेरे समान हैं और हम सभी भाई-भाई हैं । परंतु जब तक हम ज्ञानी-तू-आत्मा नहीं बनते अर्थात् भक्तों वाले संस्कारों को पूर्ण तिलांजली नहीं दे देते तब तक ये दोनों ही भाव नवीन रूप में हमारे सम्मुख आते रहते हैं, जिसे हम अनुमान भी कह सकते हैं । उदाहरण के लिए किसी भी आत्मा जिसमें आदर और स्नेह का संस्कार प्रबल है, के सम्पर्क में आने से Superiority Complex पैदा हो जाता है । हम अपनी वास्तविक अवस्था कि मैं एक आत्मा हूं,शेष सभी आत्माएं मेरे ही भाई हैं और अपने-अपने स्वभाव संस्कार और अविनाशी पार्ट के आधार पर पार्ट बजा रहे हैं, से हटकर अनुमान लगा लेते हैं कि शायद मेरे अंदर अमुक गुण है इसलिए ही यह मुझे इज्ज़त और स्नेह दे रहा है । इस गलत अनुमान के कारण उस आत्मा से लगाव हो जाता है कि और कोई तो मुझे और मेरे उस गुण को जानता ही नहीं, एक यही मुझे अच्छी तरह समझ रहा है और धीरे-धीरे उससे लगाव बढ़ता जाता है । अनुमानों की सूची भी लंबी होती जाती है । बाबा के रूप और गुणों का चिंतन न करके उस आत्मा के व्यवहार के प्रति हम सोचना शुरू कर देते हैं जिसका परिणाम है अवस्था का ऊपर-नीचे होना ।

इसी प्रकार स्वभावत: एकांतप्रिय चुप-चुप आत्मा के सम्पर्क में आने पर Inferiority Complex आ जाता है कि पता नहीं मेरे से क्या गल्ती हो गई, क्या अवगुण है जो यह आत्मा इतने रूखेपन से बात कर रही है । यहां फिर हमारा अनुमान काम कर रहा है जिसके फलस्वरूप हमारे में हीनता और नफरत पैदा होती है और उस आत्मा से बचना, किनारा करना जैसे भाव पैदा होते हैं । परंतु इन दोनों ही अवस्थाओं में व्यर्थ संकल्प बेशुमार चलते हैं और हमारी आध्यात्मिक उन्नति रुक जाती है । इसलिए किसी भी आत्मा के स्वभाव संस्कार को हम यह मानकर चलें कि यह इसका विशेष गुण है और यह सिर्फ मेरे प्रति नहीं है वरन् सभी के प्रति है । इससे हम अपने वास्तविक स्वरूप में टिके रहेंगे और दोनों तरह के भावों से बच जायेंगे ।

जो व्यक्ति अपने-आप में चुप-चुप और औपचारिक रहता है उसे हम कई बार अहंकारी की संज्ञा दे देते हैं । यह भी समझ लेते हैं यह रूखा है या इसमें किसी के प्रति प्यार नहीं है । परंतु ऐसे अनुमान के पीछे उसका अहंकार नहीं वरन् हमारी प्रभावित होने की आदत और हीनभावना ये दो प्रवृत्तियां कार्य कर रही हैं । जबकि सामने वाला व्यक्ति लज्जाशील भी हो सकता है, अपने कार्य में बहुत व्यस्त भी हो सकता है या किसी व्यक्तिगत समस्या में उलझा हुआ हो सकता है। इसी अनुमान की बात को लेकर मुझे महाविद्यालय जीवन की एक घटना याद आती है । ज्ञान में आते ही मैं एक नए कॉलेज में दाखिल हुई जहां कोई भी मेरे स्वभाव से परिचित नहीं था । सत्र के आरंभ में ज्यादा पढ़ाई न होने के कारण मैं खाली समय आश्रम चली जाती थी जिसके कारण सहपाठी बहनों से ज़्यादा मेल-मिलाप नहीं हो पाता था । लेकिन पढ़ाई में सदा प्रथम होने के नाते उन सभी को मेरे से स्वाभाविक स्नेह था । अत: मेरे व्यवहार में गप-शप, व्यर्थ वाचा का अभाव देखकर उन्होंने अनुमान लगाया कि हो-न-हो इसे अपनी बुद्धि का अभिमान है जिसके कारण यह हमारे साथ बैठती, खाती, खेलती नहीं है । करीब महीना भर बाद पढ़ाई शुरू होने के बाद जब हमारा पुस्तकों का लेन-देन, नोट्स का लेन-देन हुआ तो उन्होंने जो सोच रखा था उसके विपरीत व्यवहार को पाया । फिर उन्होंने बड़े स्नेह से बताया कि हम आपके बारे में क्या सोच बैठे थे ?

ऐसे ही कई बार ज्ञानी परिवार में भी बात कुछ होती है और बना कुछ देते हैं । और अपने लगाए गए अनुमानों को हम ऐसा

ठप्पा दे देते हैं कि कितना भी कोई समझाए, सफाई दे हम जरा भी नहीं मानना " हते । ऐसी घटनाओं के हम सभी अनुभवी हैं

इस अनुमान के कारण माया हमें ईश्वर से बहुत-बहुत दूर ले जाकर छोड़ती है । और माया के चंगुल में फंसे हम तड़पते रहते हैं । अनुमान हीनभावना से उत्पन्न होता है अत: अनुमान को समाप्त करने के लिए हमें आत्मविश्वास को बढ़ाने की आवश्यकता है और आत्मविश्वास तब बढ़ेगा जब हम अधिकाधिक योगयुक्त रहेंगे ।

आज अगर ससार में अनेक मत हैं, भ्रांतियां हैं वो सभी अनुमान ही तो हैं और उनके मूल में डर, हीनता ही तो है। जब ऐसे विचार आते हैं तो विवेक समाप्त हो जाता है । जैसे पत्थरों पहाड़ो, नदियों, वृक्षों की पूजा—इनके पीछे मानव का भय और अनुमान ही तो कार्यरत है कि ये इतने विशाल इतने उच्च कहीं मेरा कुछ बिगाड़ न दें, चलो सिर झुका देता हूँ। चलते-चलते हाथ से कोइ वस्तु छूट जाएगी दस अनुमान लगायेगा—यह कोई अपशकुन है, या किसी का कोई गुप्त संदेश है, शायद कुछ अनहोनी होने वाली है । इन्हीं अनुमानों के कारण आज ससार की हालत क्या हो गई है ? शास्त्रों में जो कुछ भरा पड़ा है वह भी अनुमान ही तो है। परंतु बाबा ने हम बच्चो को सद्‌बुद्धि दी है, सत्य और झूठ के अंतर का अनुभव करवाया है । अत: हम ज्ञानी तू आत्मा इन विवेकहीन अनुमानों से बचे रहे, जितना बचेंगे उतने न्यारे और सभी के प्यारे बनेगें।   □□□

कटक :—
ज्ञान-विज्ञान-पुस्तकालय का उद्घाटन करते हुए 'ज्ञानामृत', 'वर्ल्ड रिन्युवल' तथा 'प्योरिटी' के मुख्य सम्पादक भ्राता ब्रह्माकुमार जगदीश चंद्र जी।

हे आदि देव महान

□ब्र.कु. सूरज प्रकाश, सहारनपुर

हे आदि देव महान, हे धरती के भगवान।
युगों-युगों तक याद करेगा तुमको सकल जहान।।

हे शिव के अनन्य सपूत, हे विश्व शांति के अग्रदूत
बन भागीरथ शिव के द्वारा, बहायी जग में ज्ञान की धारा
मधुर मनोहर मुरली के स्वर, गूँज उठे इस धरातल पर
छटी दूर तक घोर निराशा, तुम से पायी जग ने आशा
कब्र दाखिल हुए सभी जब, तुमने आकर फूंके प्राण
युगों-युगों तक याद करेगा तुमको सकल जहान

त्याग तपस्या की तुम प्रतिमा, सत्य ज्ञान की तुम गरिमा
यह भी देखा अजब करिश्मा, तुम्हीं पिता और तुम्ही बड़ी माँ
जब से शिव से प्रीत है लागी, सभी सम्पदा तुमने त्यागी
ज्ञान मिला और बने वैरागी संयम, शील, धर्म अनुरागी
छू नहीं पायी तुमको जग की झूठी शौकत-शान
युगों-युगों तक याद करेगा तुमको सकल जहान

कलि की कुटिल रात्रि में तुम, जलती हुई मशाल थे
अलंकृत करूं किन शब्दों में, तुम तो बेमिसाल थे
तुम अपनी उपमा आप थे नहीं तुमसा कोई अन्य
पाकर तुमको वसुंधरा हो गई धन्य-धन्य
शब्द नहीं हैं कैसे उनकी महिमा करूं बखान
युगों-युगों तक याद करेगा तुमको सकल जहान

तुम्हारी दिव्य मार्ग-प्रदर्शना में आज हुई है पुजित नारी
तिरस्कृत किया जगत ने जिसको बनी वही स्वर्ग-अधिकारी
नया एक इतिहास तुम्हारा जग में लिखा जायेगा
वह दिन दूर नहीं है जब तू 'आदि-पिता' कहलायेगा
सम्पूर्ण विश्व की आत्माओं को मिलेगी जब पहचान
युगों-युगों तक याद करेगा तुमको सकल जहान

अभिनन्दन में बाबा आपके हम क्या अर्पण कर सकते हैं
जीवन यह पाया तुमसे, फिर तुमको कैसे पढ़ सकते हैं
प्रेम-असुँवन मोतियों की माला और स्मृति-पुष्प के हार
ओ सूक्ष्म-वतन निवासी बाबा, तुम कर लेना स्वीकार
भेंट है स्मृति-सुमन तुम्हें ओ नर-तन-धारी भगवान
युगों-युगों तक याद करेगा तुमको सकल जहान □

"आइए, शांति-पथ के अनुगामी बनें"

□ब्र.कु. 'प्रकाश' राजयोग भवन , भोपाल

वर्तमान अति आधुनिक जीवन का बाह्य परिवेश अति लुभावना है । मानव भौतिक साधनों से सम्पन्न व समृद्ध नजर आ रहा है। फिर इलेक्ट्रॉनिक युग ने तो उसकी सुख सुविधाओं में और भी चार चांद लगा दिए हैं । रोबोट व कम्प्यूटर से मनुष्य की शारीरिक व मानसिक शक्ति की सर्वाधिक बचत हो रही है । तीव्रगामी यातायात व संचार माध्यमों से सारा विश्व समीप-सा लगने लगा है। वातानुकूलित गाड़ियां, बंगले, टी.वी. रेफ्रीजिरेटर और क्या, चाहिए ? सब-कुछ तो सुलभ व सहज उपलब्ध है ।

भौतिक चकाचौंध व सुंदर वेशभूषा ने मानव का मन मोह लिया है परिणामतः प्रभवित जनसमुदाय उपरोक्त साधनों में निर्वाह करता हुआ प्रायः यह कहता पाया जाता है कि हमारे लिए तो स्वर्ग यहीं है । फिर हमें आध्यात्मिक साधना का समय कहां है ? अथवा वह कहता है हम धर्म में आस्था नहीं रखते । इन विचारों से क्या गरीबी दूर हो जाएगी ? आदि ।

परंतु यदि स्थूल जगत से तटस्थ होकर संप्रेक्षक दृष्टि से मानव जीवन के अंतरंग पहलू पर दृष्टिपात किया जाए तो, महसूस होगा कि मखमल की सेज पर लेटा इंसान भी बेचैनी-से कराह रहा है । करवटें बदलते रात गुज़र जाती है परंतु नींद नहीं आती ।

कूलर की शीतल हवा भी जैसे मन व चित्त को गर्म बना रही है। सजावट व साज-सज्जा शायद औरों को दिखाने के लिए है। आधुनिकतम लिबास व स्वादिष्ट व्यंजनों में भी रस अनुभव नही होता । वे हंसते भी शायद इसलिए हैं क्योंकि सामाजिक प्राणी हैं और हसकर ही तो अपनी सुखमय स्थिति ज़ाहिर की जा सकती है... । अपनी वास्तविकता को छिपाने के लिए वह बार-बार हाथों को मुंह पर रखते अथवा रूमाल से मस्तक का पसीना पोंछते नजर आते हैं । परंतु कोई लाख करे सच्चाई तो झलक ही जाती है । मनोवैज्ञानिक परीक्षण मानव मन की यथार्थ दशा को प्रतिबिंबित कर देता है ।

अतः स्पष्ट है कि जिनके पास धन-दौलत व शान-शौकत नहीं है वे ही नहीं वरन् साधन सम्पन्न एवं वैभवशाली व्यक्ति भी अन्यमनस्यकता, व्यग्रता या उद्विग्नता के शिकार हैं । वे भी जीवन की व्यापकता में किसी अज्ञात वस्तु की अभीष्ट सिद्धि में लगे हुए हैं... । उन्हें भी किसी सहारे या किनारे की तलाश है ।

1. अन्यान्य परिप्रेक्ष्यों में मानव का प्रयास शांति के लिए ही है...

संसार के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में परस्पर स्पर्धा, संघर्ष, ईर्ष्या और एक अजीबोगरीब-सी खींचतान (रसाकर्षण) इसीलिए है कि मानव जीवन की अभिन्नता को प्राप्त करना चाहता है। उसकी अमुक चाहना अज्ञात किंतु अनुभूत अनुभूतियां की है । यह प्रयास निजता की पुनर्स्थापना के लिए है ।

राजनीति विज्ञान, खेल, व्यापार, अभिनय, गायन-वादन आदि हर क्षेत्र में समर्पित व्यक्ति हर सम्भव प्रयास द्वारा अपना व्यक्तित्व व अस्तित्व उच्चतम व अद्वितीय बनाने हेतु सतत चेष्टावान है । वह अमुक कला को ही अपना पूज्यदेवता मानकर सतत साधना व आराधना द्वारा एक संपूर्ण सुखमय व शांतिमय जीवन की कामना कर रहा है । इस उपासना के द्वारा वह स्वयं को व सर्व को संतुष्ट करने के लिए अज्ञात लक्ष्य की ओर गतिमान है । परंतु उसकी यह समूची तपस्या वस्तुतः स्थूलता की प्राप्ति तक ही सीमित है । कोई कितना भी श्रम करता है अनेक माध्यमों से धनार्जन करता है, स्थूल साधन जुटाता है, सुंदर लिबास व आभूषण धारण करता है, ज्ञान व ख्याति चाहता है यह सब-कुछ इसीलिए ही तो है, कि उसे जीवन का परमानंद व अविछिन्न शांति चाहिए । इसी भांति कर्म-संन्यास द्वारा, हठ द्वारा, व्रत, उपवास, मालाजाप अथवा कर्मकांड आदि अन्यान्य साधनों द्वारा हठयोगी साधक, भक्त अथवा सन्यास-मार्गी उपासकों का प्रयास यथोचित मानसिक संतुष्टि व चिर शांति की प्राप्ति के लिए ही तो है।

2. स्थूलता स्थायी शांति का आधार नहीं बन सकती...

यदि सूक्ष्म मनन व चिंतन करें तो उपरोक्त सभी साधन व साधनाएं मात्र अल्पकालिक व विनाशी शांति एवं संतुष्टि

प्रदायक हैं। पुनश्च भौतिक सिद्धियां तो और ही मन को चलायमान व दुखित बनानेवाली हैं। साधनों की होड़ इच्छाओं को अनियंत्रित बना रही है। आकर्षणमय भौतिक साधनों की अप्राप्ति से मानव मन में उत्तरोत्तर निराशा, हीनता, कुण्ठा व क्षोभ पनपता जा रहा है। मनोरंजन के वर्तमान आधुनिक साधन चलचित्र आदि और ही मन में रंज़ पैदा करने वाले हैं। इस प्रकार के भौतिक साधनों की प्रतिपूर्ति व संग्रह से स्थायी शांति कदापि नहीं आ सकती।

3. शांति की अभिलाषा प्राकृतिक है...

यह प्रकृतिकृत नियम है कि हर वस्तु अपनी खोयी हुई अवस्था प्राप्त करना चाहती है। हर पदार्थ अपने मौलिक गुण-धर्म में लौट आने की प्रवृत्ति रखता है। उदाहरणार्थ प्रत्यास्थता के कारण रबड़ खिंच जाता है परंतु छोड़ने पर पुन: सिकुड़ जाता है। पानी कितना भी गर्म करो परंतु कुछ क्षण बाद वह शीतल हो जाता है। इसी प्रकार कितना भी क्रोधी व क्रूर व्यक्ति हो वह अंततोगत्वा शांत हो ही जाता है। वस्तुत: अशांति तो उन्हें भी पसंद नहीं है, जो दूसरों में अशांति फैला रहे हैं। अथवा अपने स्वार्थ की सिद्धि एवं क्षणिक शांति के लिए दूसरों का हक छीन रहे हैं, असहाय व कमजोर वर्ग पर अत्याचार कर रहे हैं।

परंतु दूसरों को दुख पहुंचानेवाला स्वयं कभी सुखी नहीं बन सकता। हिंसा व बाहुबल से शांति कभी नहीं आ सकती। तभी तो कलिंग पर महान विजय प्राप्त करने के बाद भी सम्राट अशोक का मन अशांति व क्षोभ से भरा रहा और अंतत: उसे अहिंसा, प्रेम व सहिष्णुता का मार्ग ही अपनाना पड़ा।

शांति की इस अभिनव चाहना का कारण यही है कि मानव मन की चेतना में (आत्मा में) उस पूर्वानुभूत शांति की स्मृतियां समाहित हैं। आत्मा का मौलिक स्वधर्म ही शांति है।

4. शांति आत्मा की अमूल्य निधि है इसे व्यर्थ न गंवाएं...

संसार की हर दुर्लभ वस्तु व सुख सुविधाएं धन द्वारा खरीदी जा सकती हैं परंतु मन का चैन व स्थायी शांति दुनिया के किसी भी बाज़ार में खरीदी अथवा बेची नहीं जा सकती। क्योंकि शांति आत्मा की अमूल्य निधि है। शांति ही आत्मा का श्रृंगार एवं जीवन की आभा है। शांतिरूपी पुष्पों से रहित जीवन बगिया वीरान जंगल की तरह है।जहां शांति है वहां समृद्धि स्वत: ही आ जाती है। कहा भी जाता है कि शांति में शक्ति है (Silence has the Power) देखा भी जाता है कि शांति की शक्ति से बड़े-से-बड़े कार्य बन जाते हैं जो क्रांति द्वारा कदापि नहीं हो सकते। शांतिमय व्यवहार से क्रूर-से-क्रूर व्यक्ति भी पिघल जाता है। अपराधियों, मनोरोगियों व विक्षिप्तों का उपचार शांतिपूर्ण व प्रेममय व्यवहार द्वारा किया जा सकता है। शांति का शीतल स्पर्श जलते हुए हृदयों को शीतल कर देता है। शांति की पृष्ठभूमि पर ही दिव्य गुण (Divine Virtues) रूपी कलियां पुष्पित होती हैं।

यह अनुभवयुक्त आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक सत्य है कि मानसिक तनाव, अशांति, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा अथवा क्रोध द्वारा बहुत-सी आत्मिक ऊर्जा ह्रास होती रहती है तथा लंबे समय तक उपरोक्त प्रकार के ऋणात्मक व अशुभ संकल्पों में रमण करने वाली आत्मा अति दुर्बल एवं अनेक शारीरिक एवं मानसिक रोगों से पीड़ित रहती है। उसके जीवन में उमंग व उत्साह नष्ट प्राय: हो जाता है। मानसिक एकाग्रता के स्थान पर व्यग्रता व सफलता के स्थान पर असफलताएं ही उसके हाथ लगती हैं। धार्मिक मान्यताओं के आधार पर भी कहा गया है कि—**''परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर-पीड़ा सम नहिं अधमाई''** अर्थात् परोपकार ही सर्वोत्तम धर्म है एवं पर-पीड़क बनना सबसे बड़ा अधर्म या पाप है। अर्थात् मनुष्य की सदाकाल शांति का आधार शुभ-संकल्प तथा श्रेष्ठ कर्म ही हैं। अतएव शांति की अभिलाषी आत्माओं से अनुरोध है कि वे पर-पीड़क व अशुभचिंतक न बनकर सर्व के प्रति शुभचिंतक व परोपकारी बनें। सदैव शांति में रहें, सर्व को शांति बांटें तथा सर्वत्र शांतिमय वातावरण बनाने में हर सम्भव सहयोग दें। किसी भी कीमत पर अपनी शांतिरूपी अमूल्य निधि व आत्मा की स्थायी धरोहर को व्यर्थ न गंवाएं...।

5. सच्ची शांति का श्रोत...

शांति की तथाकथित चाह की प्रतिपूर्ति तभी हो सकेगी जब शांति की अभिलाषी आत्माओं को शांति के सत्य श्रोत का ज्ञान हो। वास्तव में शांति कहीं ढूंढ़ने या भटकने से प्राप्त नहीं हो सकती वरन् शांति तो हर मनुष्यात्मा में अंतर्निहित शक्ति है, तथा उसका मूल श्रोत स्वयं शांति के सागर परमपिता परमात्मा शिव हैं जो सर्वशक्तिवान हैं, सर्वगुणों की खान हैं, सदा सर्व के कल्याणकारी, दुखहर्ता एवं सुखकर्ता हैं।अत: शांति की प्राप्ति हेतु उस सत्य परमात्मा से मन व बुद्धि का सानिध्य अत्यावश्यक है। वर्तमान कलियुगी धर्मग्लानि के समय में जबकि चारों ओर दुख-अशांति, हिंसा व कलह का वातावरण छाया हुआ है हर व्यक्ति को शांति की परम आवश्यकता है, स्वयमेव परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-

शेष पृष्ठ २७ पर

"विजयी रत्न"

□ब्र.कु. आत्म प्रकाश., आबू पर्वत

सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा शिव ने सन् १९३७ में अविनाशी रूद्र-गीता-ज्ञान-यज्ञ की स्थापना द्वारा "शिव-शक्ति पांडव सेना" का नव-निर्माण किया । स्वयं सेनापति बनकर समस्त सेना को सच्चे गीता-ज्ञान की शिक्षा से माया पर विजय पाने की युक्ति तथा राजयोगाभ्यास से दिव्य-शक्ति प्रदान की । जो मनुष्यात्माएं इस डबल अहिंसक युद्ध की कला में सम्पन्न बनकर मायाजीत बनते हैं, वो ही सफल सेनानी विजयी रत्न के रूप में विश्व-प्रख्यात होते हैं । ऐसी महावीर आत्माओं को ही परमात्मा के गले का हार बनने का परम सौभाग्य प्राप्त होता है । इतिहास के पन्नों पर आजतक भी उन्हों की वीरता अनेक यादगारों के रूप में विद्यमान है ।

तुम रूहानी योद्धे हो

दिव्य चक्षु विधाता परमात्मा ने दिव्य नेत्र द्वारा अनुभव कराया कि तुम ये स्थूल जिस्म अर्थात् शरीर नहीं हो, लेकिन 'रूह' अर्थात् अविनाशी आत्मा हो । तुम रूहों को माया ने बहुत हानि पहुंचाई है । जो तुम्हारी जीवन रूपी बगिया हरी-भरी थी, उसे माया ने विकारों की अग्नि में जलाकर उजाड़ दिया । इसलिए तुम्हें रूहानी योद्धा बनकर माया का डटकर सामना करना होगा अर्थात् आसुरी शक्तियों पर प्रभुत्व पाना ही होगा ।

तुम रूहानी योद्धा हो अब माया को ललकारो

हे महावीरो, तुम असीम शक्तियों के भंडार हो, अब माया को ललकारो । वास्तव में यह माया तुम्हारी दुश्मन है जिसने तुम्हारे मन को दूषित किया । जिन विकारों को तुम अपने संगी-साथी समझते आ रहे हो, वो ही तुम्हारे दुश्मन हैं । इन महाशत्रुओं ने ही तुम्हें रावण की जेल का बंदी बनाकर दुखों से पीड़ित किया है । माया ने तो तुम्हें बेहोश ही बना दिया अर्थात् "मैं आत्मा हूं" इस होश को ही उड़ा दिया । अभी मैं आया हूं तुम्हें माया की जेल से छुड़ाकर घर वापस ले चलने । माया को अभी तलाक देने आत्मिक स्मृति का अविनाशी तिलक तुम्हें लगाता हूं ।

माया से युद्ध करने की कला

मेरे आदेशानुसार तुम स्वयं को "आत्मा-अभिमान" और मुझ ज्ञान सूर्य परमात्मा से योग लगाते हुए दिव्य शक्तियों-रूपी शस्त्र पाकर इन विकारों रूपी असुरों का संहार करो । ये ध्यान रखना कि मुझे सदा अटैंशन में अर्थात् आत्मा के सीट पर सेट होकर ही युद्ध करना है। वरन् माया चतुराई से थप्पड़ मारकर सीट से नीचे अर्थात् देह-अभिमान में लायेगी और नीचे गिरते ही माया के ५ सैनिक घेराव डालकर तुम्हें मारकर मिट्टी में मिला देंगे ।

युद्ध के मैदान में

युद्ध करते समय माया के अनेक भयानक-डरावनी आवाज़ें तुम्हारें कानों में गूंजेगी, लेकिन घबराना नहीं । निर्भयता से मनमनाभव के महातंत्र का अजपाजप करते हुए मंजिल की ओर आगे बढ़ते रहना । सदा मैदान में मैं-पन का अर्थात् कर्त्तापन का दान देकर स्वयं को निमित्त समझकर हिम्मत से युद्ध करते रहना तो निश्चित ही तुम्हारी विजय होगी । क्योंकि विजय तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

सदा माया से सावधान रहना

युद्ध क्षेत्र में कई समस्याओं रूपी आंधी-तूफान आएंगे लेकिन विचलित नहीं होना । सबसे पहले माया बुद्धि-रूपी तार पर ही अपना वार करेगी जिसके माध्यम से तुम्हें मुझसे शक्तियों की मदद मिलती है । माया शक्तियों की मदद को बंद करके तुम्हारा मनोबल कमज़ोर करके हराने का प्रयास करेगी ।

ध्यान रखना कभी ऐसा न हो कि

★माया अहंकार के रूप में तुम पर वार करे—वास्तव में बुद्धि का अहंकार ही विघ्नों का आह्वान करता है क्योंकि अहंकार विवेक-शक्ति को नष्ट कर देता है। परिणामत: हमें बहुत कष्ट सहन करने पड़ते हैं । इसलिए माया इस रॉयल रूप से जब वार करती है तो उसे परखकर निकाल देना आवश्यक है।

★माया तुम्हारी आशा का दीपक ही न बुझा दे—कभी तुम्हारी सफलता को देखकर ईर्ष्यावश माया तुम्हारे मन के ऊपर निराशा के काले घने बादल मंडराकर निराशा का शिकार बना देगी । इसलिए न सिर्फ आशा का दीपक सदा जलता रहे लेकिन साथ में उसका उजाला भी बढ़ता रहे क्योंकि यही अनोखा

उजाला तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल बना देगा।

★माया तुम्हारे निश्चय के सिंहासन को हिला न दे—माया का सूक्ष्म वार निश्चय की नींव पर होता है। माया नींव में ही बम विस्फोट कर देती है तो सारी बिल्डिंग ही कमज़ोर हो जाती है। निश्चय के सिंहासन पर सदा विराजमान रहने से सफलता निश्चित ही मिलती है। तो किसी भी परिस्थिति में यह सिंहासन न हिले।

★माया के नकली स्वरूप को परख ही न पाओ—माया के नॉलेजफुल होना उतना ही आवश्यक है जितना ज्ञान के क्षेत्र में सम्पूर्ण नॉलेजफुल होना। यदि माया का सम्पूर्ण ज्ञान ही न होगा तो माया छुप-छुपकर वार करती रहेगी, तुम्हें कमज़ोर बनाती जाएगी। इसलिए माया से सदा खबरदार रहना और खज़ानों की वृद्धि करते जाना।

★माया कभी तुम्हें अकेलापन महसूस न कराए—जीवन में अकेलेपन की महसूसता भी माया का सूक्ष्म वार है। माया हमें अकेला देखते ही वार करती है और हमें निरूत्साहित करने का प्रयास करती है। तो युद्ध करते समय सदा सर्वशक्तिवान को अपना साथी बनायेंगे तो माया पास आने का साहस नहीं करेगी।

★माया किसी कामना की उत्पत्ति से सामना करने की शक्ति खत्म न कर दे-संसार की अनेक इच्छाएं भी माया का ही रूप है। ''भगवान मिला अब कुछ नहीं चाहिए'' यही नशा सदा रहे तो कामनाएं आत्मा को कमज़ोर नहीं कर सकेगी, जिससे सदा माया से सामना करने की शक्ति कायम रहेगी। वास्तव में कामनाएं आध्यात्मिक मार्ग पर बहुत बड़ा विघ्न है। बुद्धिवान को तो मान-शान की सूक्ष्म कामना का भी त्याग कर देना चाहिए।

''मायाजीत अर्थात् कायाजीत''

''झूठी माया, झूठी काया, झूठा सब संसार''—यह कहावत जग प्रसिद्ध है। वास्तव में इस झूठी काया के भान ने ही झूठी माया का आह्वान करके मनुष्य को भ्रमित कर दिया है। कायाजीत बनना अर्थात् स्वयं के देह के भान से परे तथा दूसरो के देह के आकर्षणों से परे रहना। इस मंज़िल को पाने के लिए आत्मिक स्थिति तथा आत्मिक दृष्टि को परिपक्व करने का अभ्यास नितांत आवश्यक है। राही को माया की कड़ी धूप से बचने के लिए सदा याद रहे कि—

''जब भूलते हैं काया, तो मिलती है बाबा की छत्र-छाया''

जितनी पवित्रता उतनी युद्ध करने की पात्रता

तुम पवित्रता के सेनानी हो, तुम्हें पवित्रता के असीम बल से माया के सेना का लंगर उठाना है। इसी सर्वश्रेष्ठ बल से युद्ध करने की क्षमता बढ़ती है। क्योंकि अपवित्रता मन को निराश, उदास व कमज़ोर बनाती है जिससे मनोबल क्षीण हो जाता है। इसलिए सफल योद्धा को हर हालत में मानसिक तथा शारीरिक पवित्रता की शक्ति के आधार से माया पर प्रभुत्व पाना है।

सदा युद्ध करते रहने के संस्कार त्रेतायुगी बनायेंगे

सदा माया से युद्ध ही करते रहने से आत्मा कमज़ोर बनती है, परिणामत: जीवन संघर्ष-भरा अनुभव करने लगती है। ऐसे कमज़ोर संस्कार वालों का यादगार तीरकमान के रूप में त्रेतायुगी राम-सीता को दिखाते हैं। वास्तव में हमारी ऐसी शक्तिशाली स्थिति हो जो माया युद्ध करने के लिए सामने ही न आ सके क्योंकि युद्ध समाप्ति के बाद ही सच्चा आनंद प्राप्त होता है।

★जो माया से हार खायेंगे, वो दूसरों को हार पहनायेंगे—युद्ध में हार खाने वाली आत्माओं की प्रालब्ध इतनी ऊंची नहीं होती। वे आत्माएं साधारण पद प्राप्त करेंगी और स्वर्ग में भी जन्म-जन्म देवी-देवताओं का श्रृंगार करने का कार्य ही उन्हें मिलेगा। वे सदा दूसरों को ही हार पहनाने में प्रसन्न रहेंगे।

''युद्ध क्षेत्र में सदा विजयी बनने के लिए''

१. सदा दिव्य शक्तियों-रूपी शस्त्रों से सम्पन्न रहें

अमृतवेले भरपूर अमृतपान करके मन को आनंद से भरपूर करें जिससे आत्मा को विभिन्न प्रकार के शस्त्र उपलब्ध हों। बुद्धिरूपी झोली शस्त्रों से सम्पन्न रहने से योद्धा दृढ़ता से दुश्मन पर हमला करता है।

२. ज्ञान मनन से मनोबल बढ़ाते रहें

मनन से ही मन की सुषुप्त शक्तियां जग जाती हैं अर्थात् मन को उसकी शक्ति का आभास होता है जिससे मनोबल बढ़ता है। मनन से ही श्रेष्ठ संकल्पों की पूंजी जमा होती है। मनन के अभाव से आत्मा खुशी में नहीं रहती। मनोबल का ही स्वरूप है साहस और हिम्मत जिससे हम स्वत: ही विजयी बनते हैं।

३. ईश्वरीय नशे का कवच पहनकर ही युद्ध करें

यह अनोखा कवच हमें दुश्मन के भयंकर वारों से सदा सेफ

रखता है । मैं कल्प-कल्प का विजयी रत्न हूं, भगवान ने मुझे अपने हाथों से विजय का अविनाशी तिलक लगाकर युद्ध के मैदान में भेजा है। यह खुदा दोस्त का नशा हमें सदा चुस्त रखेगा । सदा याद रहे कि—

''जब होगी ईश्वरीय मस्ती, तो माया न करेगी कुश्ती''

विजयी रत्न अनेकों को विजयी बनाने के प्रेरक

विजयी रत्न सदा सभी को विजयीपन के नशे में झूमते नज़र आयेंगे । उन्हों का ये अमिट नशा दूसरों को मायाजीत बनने के लिए मदद करता रहेगा । दूसरे अपने जीवन में श्रेष्ठ धारणाएं अपनाने में उन्हों के द्वारा अति सरल तथा सहज अनुभव करेंगे । उन्हों का हर्षोल्लास भरा जीवन दूसरों को संघर्षमय स्थिति में भी हर्ष का अनुभव करायेगा । वे सहज ही दूसरों को माया पर जीत पाने के दांव सिखा देते हैं, इसलिए उनका जीवन दूसरों के लिए प्रेरक होता है।

विजयी रत्न ही महादानी तथा वरदानी

विजयी रत्न के मुख से सदा वरदानी बोलों की वर्षा होती है जो अनेकों के जीवन को हरा-भरा बना देती है। उन्हों का एक-एक बोल अनेकों को बल प्रदान करता रहता है। नयनों से सदा रूहानियत की शक्ति की बरसात होती रहती है। उन्हों का दिव्य सम्पन्न चेहरा गुणों का महादान करता रहता है। उन्हों की शुभकामनाएं सभी के लिए सहारे के रूप में मदद करती हैं।

विजयी रत्न भगवान के सच्चे सहयोगी

वास्तव में ''मनमनाभव'' ही सर्वश्रेष्ठ सेवा है। इससे ही सम्पूर्ण विश्व में पवित्रता, सुख-शांति व शक्तियों के प्रकम्पन फैलते हैं । जिससे वायुमंडल परिवर्तन होता है। ऐसे बेहद सेवा में विजयी रत्नों का विशेष योगदान रहता है। ये वैजयंति माला के मणके, सभी आत्माओं के मन के भावों को जानकर परस्पर स्नेह व सम्मान देते हुए इस रूहानी सेना का गठन करने में विशेष मददगार बनते हैं । ऐसे विजयी रत्न बनने वाली आत्माओं को ही स्कॉलरशिप प्राप्त होगी और वे भगवान से भी सर्वश्रेष्ठ स्वर्ग का अधिकार प्राप्त कर सकेंगी । और भक्ति में यादगार के रूप में वैजयंती माला द्वारा भक्त उनका जन्म-जन्म स्मरण भी करते रहेंगे ।

★विजयी रत्न ही अंत में फरिश्तों के रूप में आकाश में उड़ते नज़र आयेंगे—विजयी रत्नों का यहां कोई रिश्ता नहीं अर्थात् सब रिश्ते एक से ही हों अर्थात् जो एक बाबा से सर्व संबंधों का रस अनुभव करते हैं । उन्हों का बुद्धियोग इस संसार से उपराम हो चुका होता है, उन्हों का संसार एक बाबा ही बन जाता है। ऐसे निर्बंधन ज्ञान-योग के शक्तिशाली पंख वाले पंछी फरिश्तों के रूप में विश्व के ऊपर परिक्रमा लगाते हुए नज़र आयेंगे । यही उड़ते फरिश्ते अंत में सभी की वृत्ति को उपराम बनाने में मददगार बनेंगे ।

अब की बाज़ी कल्प-कल्प की बाज़ी

भगवान के बच्चे भी यदि मायाजीत के अनुभवी नहीं बने तो और कौन बनेगा ? जिनके साथ स्वयं सर्वशक्तिवान भगवान हो, वे ही यदि माया से डरेंगे तो माया को चैलेंज कौन करेगा ! वास्तव में ईश्वरीय जीवन का सम्पूर्ण आनंद विजयी रत्न बनने में ही है। यही वर्तमान के विजयीपन के संस्कार जन्म-जन्म साथ चलेंगे । उन्हें पूरे कल्प में कभी भी हार का अनुभव नहीं होगा ।

तो आओ, हम सभी विजयी रत्न बनने के लिए घोर तपस्या करें, कल्प-कल्प की बाज़ी को जीत लें। ये अंतिम मौका हमारे हाथ से निकल न जाए। हम प्रभु के गले का चेतन हार बन जाएं ताकि सारे संसार की हम शोभा बन जाएं और संसार हमें देखकर गौरान्वित हो। □

पृष्ठ २४ का शेष

विद्यालय के माध्यम से सारे विश्व में आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग की शिक्षा द्वारा संपूर्ण शांति व सुखमयी सृष्टि की स्थापना कर रहे हैं ।

अतएव शांति के साधकों से एवं जनसामान्य से विनम्र आग्रह है कि वे वर्तमान विषम परिस्थितियों में व्यक्तिगत व सामूहिक शांति की अवधारणा द्वारा विश्वशांति की स्थापना में सहयोगी बनें ।

तदर्थ संसार को परिवार समझते हुए जाति-धर्म, ऊंच-नीच के भेदभावों से परे होकर मानव मात्र से प्रेम व शांतिमय व्यवहार करने की आवश्यकता है । **''शांति देना ही लेना है।''** क्यों न हम इस श्रेष्ठ व पुण्य कार्य में जुट जाएं तो आइए समस्त जनमानस के प्रति सतत शुभभावना व शुभकामना रखते हुए सकारात्मक व शुभचिंतन करें । शांति प्रार्थना या मनोयोग द्वारा सारे विश्व में शांतिमय शीतल प्रकम्पन फैलाएं तथा आत्मा में छिपी शांति की अभिनव चाहना की पूर्ति हेतु हम सब शांति के पुनीत पथ के अनुगामी बनें। □□□

"स्नेह"

प्यार या प्रेम है तो ढाई अक्षर का,जिसपर सारे संसार का चक्र घूम रहा है। चाहे मनुष्य हो वा पशु-पक्षी सबके जीवन का आधार प्रेम है। कहा भी जाता है— प्रेम में वह ताकत है जो पत्थर को भी मोम बना देता है। प्रेम में शैतान भी इंसान बन जाता है। परंतु वह कौन-सा प्रेम ?

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी कई परामनोवैज्ञानिक (Parapsycologist) ने भी यह विश्लेषण किया है कि अगर वृक्ष को भी उपेक्षित रूप से कितना भी अच्छा खाद-पानी दिया जाए और साथ-साथ अन्य पौधे को प्यार सहित वही चीज़ें मिलें तो जो प्यार से सींचित किया गया पौधा है वह ज्यादा फल-फूल देता है; तो एक मनुष्य जो चैतन्य पौधा है उसके जीवन में प्यार भरे व्यवहार का अवश्य ही लाभ महसूस हो सकता है। तो क्या वह देहधारी का प्रेम हो सकता है !! अगर वह प्रेम मनुष्य को ऊँच, पावन व दिव्य बना सकता तो आज मनुष्य निराशा व एकाकीपन से अपने आपको छुड़ाने के लिए टी.वी. (T.V.) , सिनेमा व अन्य मनोरंजन के पीछे न भागता, न ही उसे जीवन में तनाव वा अन्य बीमारी का भोग भोगना पड़ता और उससे छूटने के लिए उसे नशीली चीजों (TRANQUILLIZER) का सेवन करना पड़ता।

इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य को जिस प्रेम की तृष्णा है वह यह नहीं है, कुछ और है जो सिर्फ परमात्मा से ही प्राप्त हो सकता है। परमात्मा जो स्नेह का सागर है, सर्व सम्बन्धों की सैक्रीन है, वह ही हमें यह (प्रेम) दे सकता है। स्नेह महान जादू है। "LOVE IS GREAT MAGIC". स्नेह परिवर्तन का आधार है, प्रभू के साथ के स्नेह की शक्ति स्वयं के पुराने स्वभाव-संस्कार पर विजय प्राप्त कराती है। इतना ही नहीं बल्कि दैवी संस्कार धारण करवाती है। स्नेह की शक्ति निर्विघ्न, विघ्नविनाशक बनाती है। सभी मुश्किलों को प्रभुप्यार आसान बना देता है। यही स्नेह की शक्ति भरे बोल—'मीठे मीठे बच्चे' हमें प्यारे लगते हैं। नहीं तो सिर्फ यही दो बोल प्यार की मीठी रुहानी दृष्टि और टोली, जिससे हम अपना पूरा जीवन न्यौछावर न कर देते। बाबा का वह प्यार इतना तीव्र न होता तो जो आज हम; कितनी भी भौतिक व सामाजिक प्रतिष्ठा, ऊँची पढ़ाई की उपाधियाँ या ऐश्वर्ययुक्त-साधन सम्पन्न जीवन छोड़कर इतनी संख्या में समर्पित भाई बहन न होते। बाबा का अति तीव्र परंतु नि:स्वार्थ स्नेह हमें अपने (बाबा के) प्रति आकर्षित कर सदाकाल के लिए समीप बुला लेता है। यह बाप का स्नेह, ईश्वरीय परिवार का स्नेह, दिल का स्नेह, नि:स्वार्थ स्नेह ही हमें श्रेष्ठ आत्मा बना देता है। जब स्नेह में बाप के बन जाते हैं तो फिर ज्ञान की गहरी प्वाइंट भी सहज स्पष्ट हो जाती है। आगे बढ़ने में भी मेहनत वा समय नहीं लगता; क्योंकि जो स्नेह में नहीं आता उसकी वृत्ति क्या ! क्यूँ ? कैसे ? इसमें ज्यादा चली जाती है। और स्नेह में जब लवलीन हो जाते तो स्नेह के कारण बाप का हर बोल स्नेही लगता है, जिससे हमारे सब प्रश्न समाप्त हो जाते हैं। और उस स्नेह आकर्षण के कारण प्रश्न करेंगे भी तो समझने के रूप में करेंगे। यही प्यार सदा प्राप्त करते रहें, उसके प्यार में सदाकाल के लिए खो जाएं। वह जो शिक्षायुक्त बातें बोलता है उसमें प्यार ही दिखाई देता है। कैसी भी समस्या वा कमज़ोरी हो, हर परिस्थिति में बाबा के हमारे प्रति जो भी बोल है, श्रीमत है वह हमें करना ही है। यह बाबा के स्नेह का रेसपान्ड देना है। करेंगे, देखेंगे, सोचेंगे यह स्नेही के लक्षण नहीं हैं। तो इस ईश्वरीय जन्म का, सेवा की इतनी विशाल बुद्धि का, भिन्न-भिन्न धर्म, देश-वेष-भाषा के पर्दे व असमानता होते हुए भी एक बाप ही संसार हो इसका आधार भी यह नि:स्वार्थ ईश्वरीय स्नेह ही है। वह आत्मा सदा अचल, अडोल, अटल और निर्विघ्न स्थिति का अनुभव करेगी। और प्रत्यक्ष-रूप में दूसरों से व्यवहार में सदा रहमदिल, बड़ी दिलवाली होगी। इस ईश्वरीय स्नेह का गायन भक्ति में भी 'मूकं करोति....... परमानन्दम् माधवम्' के रूप में गाया हुआ है। जो हमें सहजयोगी, कर्मयोगी और सर्वस्व त्यागी सहज बना देता है।

बहुमुखी दृष्टि से देखें तो स्नेह एक अलौकिक महान शक्ति है। प्रभू प्यार से दृष्टि स्नेहपूर्ण बनती है। ज्योतिबिंदू बाप से बुद्धियोग जोड़ने से हृदय से स्नेह का स्रोत बहना शुरू होता है। उसी खुदाई प्यार के कारण हम स्नेह स्वरूप बनते हैं, यही स्नेह हमें सिखाता है—SPEAK SWEET, SHORT AND SLOWLY. (मीठा बोलो, कम बोलो, धीमे बोलो)

इस प्रेम से आत्मा तृप्त हो जाती है। जन्म-जन्मांतर की इच्छाओं से, तृष्णाओं से मुक्त होकर मुक्ति-जीवन-मुक्ति का अनुभव कर सकती है। परमात्म प्यार में लवलीन आत्मा सब समस्याओं को भूल अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर गा उठती है—तू मिला कुछ और न चाहूँ तुझमें सब कुछ पाया है...।

ओमशांति

□ बी.के. चेतना बड़ौदा

सहकारात्मक सेवा और सतयुगी अहिंसा परमोधर्म

□बी.के. रमेश गामदेवी., बम्बई

दाता-वरदाता और विधाता के हम बच्चे हैं। हमें कार्य करना है। समय की कमी के कारण हमें यह कार्य जल्दी से करना है। हम ब्राह्मणों की वर्तमान संख्या करीब १,६०,००० है और हमें अनेक कार्य करने हैं । नियमों का तथा ईश्वरीय मर्यादाओं का भी पालन हमें करना है तो साथ-साथ स्व-उन्नति के लिए पुरुषार्थ भी करना है । जीवन निर्वाह अर्थ लौकिक कर्म आदि का कार्य भी करना है । यह शरीर भी उम्र बढ़ने के कारण कम साथ देता रहेगा तो भी ये सभी करना है ।

विज्ञान ने कार्य जल्दी करने के लिए अनेक साधनों का निर्माण किया है । कम्प्यूटर आदि अनेक उपकर्णों का संशोधन हुआ है । हवाई जहाज़ तथा राकेट आदि द्वारा गति तीव्र हुई है । इसी प्रकार हमें अपनी ईश्वरीय सेवा की प्रगति की गति बढ़ाने के लिए तीव्रगति का पुरुषार्थ चाहिए । इसलिए साधनों में परिवर्तन तथा साधना में शक्ति भरनी पड़ेगी । कार्य को विस्तृत बनाने के लिए, कार्य में मदद ज्यादा-से-ज्यादा लोग करें—ज्यादा-से-ज्यादा लोग शिवबाबा का कार्य अपना कार्य समझें और उसी को अपना समझकर अपनी सहयोग रूपी अंगुली दें ऐसे प्रोग्राम दुनिया के सामने रखने चाहिएं ।

शांति वर्ष में शांति के बारे में तथा शांति के अर्थ जो भी पुरुषार्थ करनकरावनहार शिवबाबा ने हम बच्चों से कराया उससे सब अवगत हैं । शांति हमारा स्वधर्म है उसी कारण सतयुगी दैवी दुनिया का आभूषण भी है ।

उसी प्रकार सतयुग में अहिंसा परमोधर्म है । सतयुग में अहिंसा का जो अर्थ है और धर्म का रूप है उसको विश्व को समझाने से इस बात के बारे में जो प्यारे बाबा की क्रांतिकारी परिभाषा इस विषय में है उसी का भी लोगों को शब्दार्थ आ जायेगा । वर्तमान प्रचलित अनेक धर्म तथा सम्प्रदायों में अहिंसा की विविध रूप से उपासना होती है । जैन धर्म में जीव हिंसा के बारे में अनेक बातें बताई गई हैं और अहिंसा द्वारा आत्म-शुद्धि अर्थ उपवास आदि बताये गये हैं । बौद्ध धर्म का प्रचार ही यज्ञ में होने वाली हिंसा का विरोध और अहिंसा का सत्य दर्शन द्वारा हुआ । ईसाई धर्म में भी कहा गया—कोई एक गाल पर चमाट लगाये तो दूसरा गाल आगे करो । अहिंसा के लिए सहनशक्ति के प्रयोगों को कहा गया । इस प्रकार अहिंसा के अनेक रूप हैं । जैन धर्म में उनके मुनीराज अपने मुंह के आगे एक सफेद वस्त्र बांधते हैं जिससे हवा में रहे जंतुओं की हिंसा न हो । अहिंसा के लिए उपवास आदि अनेक प्रकार की साधना उन्होंने बताई है ।

आज के विश्व में हिंसा के अनेक रूप दिखाई पड़ते हैं । हिंसा ज्यादा में ज्यादा हो, ज्यादा में ज्यादा लोग कम-से-कम समय में मरें उस लिए अनेक उपकरणों का संशोधन किया गया । आतंकवाद तथा अपने क्षुद्र स्वार्थ के कारण अनेक देशों में अनेक प्रकार की हिंसा होती है । शस्त्रों की रचना हो रही है । हिंसा का दावाग्नि प्रचंड रूप अनेक देशों में व्यापक रूप में दिखाई पड़ता है । हिंसा का यह तांडव नृत्य कैसे बंद होगा ?

हिंसा का सूक्ष्म विचार— रूप का ज्ञान भी शिवबाबा ने हम बच्चों को दिया है । विकार के कारण होने वाली हिंसा—अपवित्रता का ज्ञान सबको कराना ज़रूरी है । हिंसा के इस सूक्ष्म मनोव्यापार द्वारा हम अहिंसा और उसी के द्वारा उत्पन्न होने वाली चरित्रता का ज्ञान सबको दे सकें, ऐसा पुरुषार्थ करना ज़रूरी है ।

सेवा का विस्तार सुलभ है, सहज भी है । परंतु उसी समय एक बात ध्यान में अवश्य रखनी पड़ेगी । सहज साधनों के कारण ऐसा ना हो जाए—हम लक्ष्य से थोड़े दूर चले जाएं । साधन, साध्य और साधना का विवेक रखना होगा । सेवा साधन है । साध्य है हमें सम्पूर्ण बनना है और सम्पूर्ण सृष्टि की स्थापना करनी है । और ये दोनों कर्त्तव्यों के लिए पुरुषार्थ-रूपी साधना करनी है । उसी कारण सेवा ऐसी हो जो हमारे लक्ष्य को आसानी-से सिद्ध करे । धर्म के क्षेत्र में अनेक बातें हैं । किंतु हमें नई दुनिया में शांति-स्वधर्म और अहिंसा-परमोधर्म की बात को ध्यान में रखकर उसी के द्वारा लक्ष्यपूर्ति करनी है ।

अहिंसा अनेक धर्मों का मुख्य अंग है और अनेक साधु-संत-महात्मा आदि-आदि ने उस पर अपने जीवन कुर्बान किये हैं ।

इसलिए अहिंसा रूपी मूल्य को समाज के सामने फिर से व्यापक रूप में रखने से इन सबका इसमें सहकार मिलेगा। शांति से अहिंसा और अहिंसा से पवित्रता की मंज़िल सहज होगी। सहकारात्मक सेवा में अब यदि अहिंसा का प्रयोग करें तो व्यापक रूप से उसमें सबका साथ मिलेगा क्योंकि हिंसा-अहिंसा के बीच के गजग्राह से सब पूर्व परिचित हैं। अहिंसा से शांति की अनुभूति विशेष होगी। इस प्रकार स्वधर्म और परमधर्म के बीच का संबंध क्या है वह सबको बताने से सतयुग की स्थापना का कार्य सहज होगा।

अहिंसा को सिद्ध करने के लिए नई किताब, प्रदर्शनी आदि बने और हमारे जो अनेक संग्रहालय हैं उसमें नई विभिन्नता (New Variety) लाने के लिए एक अहिंसा को सिद्ध करने वाला—परमधर्म के रूप में सिद्ध करने वाला संग्रहालय भी हो। अहिंसा को जीवन व्यवहार का आधारशील मानने वाले सतयुगी सुनहरी सृष्टि में आ सकेंगे। अहिंसा का व्यापक प्रचार करना हमारे लिये ज़रूरी है क्योंकि हमें इस दिव्यगुण का मूल्य क्या है यह मालूम है और इस दिव्यगुण का व्यापक प्रचार ज़रूर होगा। अगर हम नहीं करेंगे तो ड्रामा हमारे से करायेगा क्योंकि यह दिव्यगुण सतयुगी सृष्टि का आधार स्तम्भ है। आधार स्तम्भ को आधार, आदर तथा सहकार देने वाली भी अनेक आत्माएं निकलेंगी। इसके लिए चाहिए सिर्फ थोड़ा-सा आदि का पुरुषार्थ और मार्गदर्शन। इतने बड़े दैवी परिवार से ज़रूर कोई तो इस बात का पान का बीड़ा उठायेगा—कोई तो भागीरथ बनकर अहिंसा की गंगा को इस धरा पर फैलायेगा।

इस लेख का मूल उद्देश्य ही है ऐसे मास्टर भागीरथ का आह्वान करना—उसका अभिवादन करना। कल्प पहिले की तरह ज़रूर यह कार्य भी होगा। हिंसा और भय-प्रधान सृष्टि में अहिंसा और पवित्रता का झंडा लहराना है। समय की यह पुकार है। □□□

ओ मानवता के अग्रदूत

कवि देवीचंद कौशिक, उत्तम नगर, (दिल्ली)

पापों के अगाध सागर में पापों से बोझिल जीवन नैया को
तूने ही तो किनारा दिया।

विस्मृति के कूप में गिरे असमर्थ असहाय बने मानव का
तूने स्मृति के तिलक से श्रृंगार किया।

कृतघ्न नरों द्वारा, पतित दलित बनी नारी को
तूने पावनता के हिमालय पर बैठाया।

सर्पिणी और नर्क-द्वार के कलंक से बोझिल अबला को
स्वर्ग-द्वार खोलने वाली सबला बनाया।

देश भाषा-धर्म की घनी निर्धन जाति और वर्ण की
जंज़ीरों से बंधे मानव को बताया।

आत्मा है जाति, प्रेम तेरी भाषा, पवित्रता है धर्म, मानवता परिभाषा
तूने ज्ञान का अनोखा शंख बजाया।

तूने सूखे और सूने रेगिस्तान को कंटीले और वीरान को
फुलवारी का मधुबन बना दिया।

तू न देवता था न मनुष्य, एक दर्पण था मनुष्यता का
तूने निराकार को साकार बना दिया

युग-युग से भटकी संतान को, हर प्यासे अरमान को
पिता से मिलाया पूरा कराया।

जो तेरे चरित्र देखता, तुझे भगवान समझने की भूलकर बैठता
क्योंकि तूने अंतर को मिटा दिया।

ईश्वर तेरी भाषा में बोलता रहा, धर्म तेरे कर्मों में बोलता रहा
तू कांटों से फूल, फूलों में सुगंध भरता रहा।

तू जीवन भर विश्व के लिए शिव का होकर क्या रहा
खुद को ही शिवमय बना दिया।

स्मृति के इन पावन क्षणों में हम हृदय से तुझे श्रद्धांजलि देते हैं
लेकिन नहीं
तुझे तो श्रद्धा के योग्य जीवन बनाने का संकल्प चाहिए
तुझे तो कांटों को फूल बनाने वाले दृढ़व्रती चाहिएं
अच्छा तो आज हम
अपनी विजय में विश्वास भरकर स्वर्ग निर्माण का संकल्प संजोकर तेरे अविस्मृत अलौकिक प्यार की सौगंध लेकर कहते हैं
कि—

□ तेरी जगाई आध्यात्मिक क्रांति को मानव के मन-द्वार तक ले जायेंगे
□ तेरी जलाई ज्ञान-मशाल को हर अंधेरे कोने में फैलायेंगे
□ शांति के पाठ और रूहानियत के रंग को क्षितिज के पार ले जायेंगे
□ हम तेरे थे हैं और रहेंगे □

आध्यात्मिक सेवा समाचार

जम्मू: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंति वर्ष के उपलक्ष्य में स्थानीय सेवाकेंद्र की ओर से विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन गांधी नगर, गोल मार्किट ग्राउंड में दिनांक २४ नवम्बर, ८६ से ९ दिसम्बर, ८६ तक किया गया। मेले का उद्‌घाटन भ्राता मूलाराम जी, स्वास्थ्य मंत्री ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया तथा उन्होंने ने बहुत ही रूचि से पूरे मेले का अवलोकन किया। लगभग २०,००० आत्माओं ने अपने सच्चे पिता का परिचय प्राप्त किया। योग-शिविर में आने वाले भाई-बहनों के लिए स्नेहमिलन का कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें ८० भाई-बहन उपस्थित थे। अधिकांश भाई-बहनों ने अनुभव सुनाते हुए वहां पर नियमित सेवाकेंद्र खोले जाने की इच्छा प्रकट की। □

पटना: समाचार मिला है कि सेवाकेंद्र की ओर से कार्तिक पूर्णमासी के गंगा-स्नान के अवसर पर चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई जिससे अनेक शिवभक्तों ने ज्ञान-स्नान कर पावन बनने की प्रेरणा ली। स्थानीय सर्व सेवा समाज समिति के निमंत्रण पर पुनाही चौक में आध्यात्मिक प्रदर्शनी और राजयोग-शिविर का भी आयोजन किया जिसका उद्‌घाटन वहां के भूतपूर्व मंत्री बहन किशोरीदेवी जी ने किया। प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् उन्होंने कहा कि शिवपिता से मिलने का सच्चा साधन राजयोग ही है। इसके अलावा कौमी-एकता सम्मेलन में भी प्रवचन करने का निमंत्रण मिला। □

काठमांडू (नेपाल): महारानी के ३८वें जन्मदिन के अवसर पर स्थानीय सेवाकेंद्र विश्वशांति भवन में ३ दिन का राजयोग शिविर आयोजित किया गया जिसका उद्‌घाटन भ्राता परशु नारायण चौधरी जी, सप्लाई मंत्री ने ३८ दीपक प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर और भी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। □

रॉयपुर: ईश्वरीय विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंति वर्ष के उपलक्ष्य में 'विश्वशांति आध्यात्मिक सम्मेलन' का आयोजन किया गया। सम्मेलन में दादी जानकी जी भी पधारी थीं जिनके आगमन का समाचार स्थानीय समाचारपत्रों में विस्तृत रूप से प्रकाशित हुआ।

दादी जी ने सम्मेलन में संबोधित करते हुए दुख अशांति की जड़-विकारों (बुराइयों) को त्यागने की प्रेरणा दी। सम्मेलन में भ्राता गोविन्द लाल जी वोरा, प्रधान सम्पादक, दैनिक अमृत संदेश, भ्राता तिलक राम देवांगन, अध्यक्ष, म.प्र. राज्य वस्त्र-उद्योग निगम ने तथा शहर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। आकाशवाणी के रॉयपुर केंद्र से भी इस कार्यक्रम का प्रसारण हुआ। सम्मेलन से प्रेरित होकर कुछ भाई-बहन सेवाकेंद्र पर भी आ रहे हैं। □

पणजी (गोवा): स्थानीय सेवाकेंद्र की ओर से वहां के डिचोली गांव में विशेष अवसर पर चैतन्य देवियों के स्टॉल तथा प्रदर्शन का आयोजन किया गया जिसका उद्‌घाटन बॉम्बे के प्रसिद्ध प्रवचनकार, योगी भ्राता नारायण आठवले जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। लगभग २००० आत्माओं ने इस आयोजन का लाभ लिया। इसके साथ ही ईश्वरीय ज्ञान के नियमित क्लॉस का उद्‌घाटन भी किया गया। □

मुलुंड-चेकनाका (बम्बई): सेवाकेंद्र की ओर से आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन वहां के महा-नगरपालिका स्कूल के मैदान में किया गया जिसका उद्‌घाटन वहां के स्थानीय नगरसेवक एवं शहर कांग्रेस समिति (आई.) के अध्यक्ष भ्राता बी.बी. मोरे जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। लगभग ८००० आत्माओं ने प्रदर्शनी को देखा। परिणामस्वरूप कई आत्माएं सेवाकेंद्र पर ज्ञान-योग के क्लॉस करने आ रही हैं। □

लखनऊ: स्थानीय सेवाकेंद्र पर आदरणीय दादी प्रकाशमणी जी, मुख्य प्रशासिका, ई.वि.वि., दिनांक ६.१२. ८६ को पधारीं। दादी जी के आगमन का समाचार वहां के स्थानीय समाचारपत्र में भी छपा। वहां दादी जी ने सेवाकेंद्र के नये भवन का शिलान्यास किया। भ्राता आर.पी. सिंह, अतिरिक्त मुख्य परियोजना अधिकारी, विश्व बैंक परियोजना लखनऊ ने दादी जी के प्रति शिलान्यास करने के लिए कृतज्ञता प्रकट की। □

सम्बलपुर: अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष के उपलक्ष्य में स्थानीय सेवाकेंद्र द्वारा 'विश्वशांति सम्मेलन' का आयोजन वहां के 'अशोका' चलचित्र भवन में किया गया। भ्राता जगदीश चंद्र जी, मुख्य सम्पादक, ज्ञानामृत ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि मानव जीवन में आत्मशुद्धि और पवित्रता रहने से ही शांति का पाना सुनिश्चित है और शांति अथवा अशांति मनुष्य के कर्म तथा उसके संस्कार पर ही निर्भरशील है। सम्मेलन के पश्चात् स्थानीय समाचारपत्रों के सम्वाददाताओं ने भ्राता जगदीश चंद्र जी से भेंट की और भारतीय आकाशवाणी सम्बलपुर केंद्र के निर्देशक ने इंटरव्यू भी लिया। □

लातूर: सेवाकेंद्र की ओर से दिनांक २३.११.८६ से ७.१२.८६ तक 'शांति मेले' का आयोजन किया गया। मेले से लगभग ५०,००० आत्माओं को शांति का तथा शांति सागर शिवबाबा का संदेश दिया गया। शहर के गणमान्य व्यक्ति सहित हज़ारों आत्माओं ने राजयोग शिविर में भी भाग लिया। फलस्वरूप कई नये भाई-बहनें क्लॉस के नियमित विद्यार्थी बने हैं। □

आदिपुर (कच्छ): समाचार मिला है कि स्थानीय सेवाकेंद्र द्वारा सिन्धी भाई-बहनों का स्नेहमिलन का कार्यक्रम वहां के सिंधु सेवा समिति ट्रस्ट के हेल्थ चेक-अप सेंटर के हाल में रखा गया। इसमें प्रमुख रूप से दादी प्रकाशमणी जी, मुख्य प्रशासिका ई.वि.वि. भी पधारी थीं। वहां की लगभग ११ संस्थाओं ने दादी जी का स्वागत किया। □

विन्ध्यांचल (मिरज़ापुर): शहर में आयोजित विश्वशांति महायज्ञ के अंतर्गत 'विश्व-धर्म संसद' अधिवेशन और 'विश्वशांति सम्मेलन' के कार्यक्रमों में ब्रह्माकुमारी बहनों को आमंत्रित किया गया। इसमें उपस्थित साधु-संत-महात्माओं सहित लगभग १०,००० आत्माओं को सनातन धर्म का सच्चा अर्थ तथा विश्व में शांति कैसे होगी के रहस्यों से ब्रह्माकुमारी बहनों ने अवगत कराया। □

भोपाल: अरेरा कॉलोनी राजयोग भवन में स्वर्ण जयंति समारोह एवं दिव्य समर्पण समारोह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ । सारा भवन विद्युत बल्बों की स्वर्णिम लड़ियों द्वारा सजाया गया था । स्वर्ण जयंति समारोह का उद्‌घाटन दादी जानकी जी, भ्राता महेंद्र जी, न्यायमूर्ति भ्राता एस. कुरेशी जी, मुख्य बहनों तथा गणमान्य अतिथियों ने ५० मोमबत्तियां जलाकर किया ।

इसके अतिरिक्त ७ कन्याओं का अलौकिक सेवार्थ दिव्य समर्पण बड़े ही उमंग-उत्साह स्नेहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

भोपाल के औद्योगिक उपनगर भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लि. में स्थित पिपलानी सांस्कृतिक भवन में दो दिवसीय विश्वशांति सम्मेलन का आयोजन किया गया । दोनों ही दिन सम्मेलन की अध्यक्षता भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स के महाप्रबंधक भ्राता बी.एन. घोष जी ने की । सम्मेलन के मुख्य अतिथि भ्राता विट्ठल भाई पटेल जनशक्ति नियोजन मंत्री (म.प्र.) ने विश्वविद्यालय की बहुत सराहना की ।

भोपाल बेरागढ़ में रूहानी सिंधी सम्मेलन का विशाल आयोजन किया । सम्मेलन के मुख्य अतिथि म.प्र. विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद शुक्ल जी ने की । □

सहारनपुर: शिवालिक पर्वत की मनोरम घाटी में माता शुकुम्भरा देवी का विशाल मेला लगता है जिसमें आसपास के कई प्रांतों व जिलों से लाखों भक्त देवी दर्शन के लिए आते हैं। इस मेले में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। इस प्रदर्शनी को कई हजार आत्माओं ने देखा और शिवबाबा का परिचय प्राप्त किया। □

भुज-कच्छ: में ''स्वर्ण युग आध्यात्मिक मेले'' का आयोजन किया गया। मेले का उद्‌घाटन आदरणीय प्रकाशमणी दादी जी और श्रीमती कुमुदीनीबरन् पंचोली के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। मेले के अवसर पर प्रेस कांफ्रेस रखी थी करीब २२ प्रेस वालों ने भाग लिया। मेले का समाचार सभी अखबारों में निकला तथा रेडियों द्वारा भी प्रसारित हुआ। दादी जी का प्रवचन रेडियो द्वारा प्रसारित किया गया। मेले के बीच बैंक मैनेजर्स, ऑफिसर्स, डॉक्टरों का स्नेहमिलन रखा गया।

मेले के समाप्ति समारोह में महंत श्री विजय दास जी (मंत्री खेतीबाड़ी-पशुपालन-ग्राम विकास गुजरात राज्य) पधारे थे। □

अव्यक्त स्थिति

□ बी.के. किरणपाल., मुजफ्फर नगर

जीव-आत्मा, दो हिस्सों से मिलकर बनी है । एक जीव, अर्थात् पांच तत्वों से बना शरीर और दूसरी आत्मा। इनमें से शरीर का स्वरूप व्यक्त है अर्थात् सामने प्रदर्शित है, परंतु आत्मा अपने स्वरूप में अव्यक्त है अर्थात् आत्मा इन स्थूल नेत्रों से नहीं देखी जा सकती । जीव-आत्मा का शरीर (व्यक्त) को छुपाना अर्थात् पांच तत्वों से बना दिखाई देने वाला शरीर होते हुए भी, उससे अलग अशरीरीपन का अनुभव करना और अव्यक्त (आत्मा) को व्यक्त (प्रत्यक्ष) अनुभव करना, इसको अव्यक्त स्थिति कहते हैं । जैसे कहते भी हैं कि जैसा सोचते हैं, वैसा बन जाते हैं । कहावत है कि "Face is the index of mind" अर्थात् मनुष्य के चेहरे से मन के भाव प्रकट हो जाते हैं। उदाहरणार्थ—जैसे हमारे मीठे बाबा अंतिम समय में फरिश्ते की तरह दिखाई देते थे। जैसे कि बाबा का शरीर ही वास्तव में प्रकाश (Light) का बना हुआ पारदर्शी (Transparent) जैसा दिखाई पड़ता था।

जब हम अशरीरीपन की स्थिति में स्थित रहते हुए आत्मिक स्थिति में रहेंगे, तो न केवल हमको बल्कि दूसरों को भी हमसे यह स्थिति स्पष्ट दिखाई देगी और हमारा व्यक्त भाव समाप्त हो जायेगा । व्यक्त भाव समाप्त होना ही अव्यक्त स्थिति कहलाता है। अव्यक्त स्थिति के द्वारा ही हम मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों रूपों से बेहद की सेवा कर सकते हैं। □ □

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, सम्पादक, ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओमशांति प्रेस, कृष्णानगर, देहली-५१ से छपवाया । Regd No. 10563/65-D, (E)—70